

शासनसम्राट विजयनेमिसूरिश्वरजी  
महाराज गुरुभ्यो नमः

# प्रकरण रत्नाकर मूल



तपगच्छ पूज्यपाद गुरुणीजी महाराज सौभाग्यश्रीजी  
महाराजना शिष्या चंपाश्रीजी महाराजना प्रथम शिष्या  
दर्शनश्रीजी महाराजना शिष्या लाभश्रीजी  
महाराजना सदुपदेशथी.



छपावी प्रसिद्ध करनार  
महेता नागरदास प्रागजीभाइ.  
ठे. दोशीवाडानी पोळ-अमदावाद.



संवत १९९२.  
विज्यादशमी

सने १९३६

विर संवत  
२४६२

मूल्य अमूल्य

शासनसम्राट विजयनेमीसूरिश्चरजी महाराज गुरुभ्यो नमः

# प्रकरण रत्नाकर मूल.

तपगच्छ पूज्यपाद गुरुणोजी महाराज सौभाग्यश्रीजी  
महाराजना शिष्या चंपाश्रीजी महाराजना शिष्या निष्या  
दर्शनश्रीजी महाराजना शिष्या लक्ष्मणश्रीजी  
महाराजना सहपदेशथो.



छपावी प्रसिद्ध करुणार

महेता नागरदास प्रागजीवाड.

ठे. दोशीवाडानी पोळ-अमदावाद.



संवत १९९२.  
विज्या दशमी.

सने १९३६.

वीर संवत  
२४६२

धी वीरविजय प्रिन्टिंग प्रेसमां शा. मणीलाल छगनलाले  
छाप्युं ठे० रतनपोळ सागरनी खडकी--अमदावाद.

मूल्य अमूल्य.

## अगाउथी मदद आपनार गृहस्थोना नाम.

| रुपिया.                    | नाम              | ठेकाणु. |
|----------------------------|------------------|---------|
| ५०) शेठ मोहनलाल परसोतमदास. |                  | पाटण    |
| २५) बेन हरकोर.             |                  | खंभात   |
| २५) बेन समरत केशवलाल.      | गुसापारेखनी पोळ  | अमदावाद |
| ११) बेन शुभी.              | "                | "       |
| ११) शेठाणी बाइ मणी.        | सुरदास शेठनी पोळ | "       |
| ११) बाइ धीरज वाडीलाल.      | "                | "       |
| ११) बेन लक्ष्मी.           | "                | "       |
| ११) गंगाबेन वाडीलाल.       | राजामहेतानी पोळ  | "       |
| १०) बेन मेना.              | शाहपुर           | "       |
| १०) जासुदबेन धोळीदास.      | काकाबळीआनी पोळ   | "       |
| १०) बेन विज्या.            | सुरदास शेठनी पोळ | "       |
| १०) बाइ दीवाळो.            |                  | खंभात   |
| ५) शाह खाते.               | सुरदास शेठनी पोळ | अमदावाद |
| ५) बेन मणी.                | "                | "       |
| ५) बेन महालक्ष्मी.         | "                | "       |
| ५) बेन चंचळ.               | "                | "       |
| ५) बेन जीवी.               | "                | "       |
| ५) बेन रुखी रतनचंद.        | "                | "       |
| ५) बेन सीता.               | "                | "       |
| ५) बेन शान्ता.             | "                | "       |
| ५) बाइ चंचळ.               | "                | "       |
| ५) बेन चंपा.               | रुपासुरचंदनी पोळ | "       |
| ५) बेन जासुद.              | शामळानी पोळ      | "       |
| ५) बेन जासुद.              | गुसापारेखनी पोळ  | "       |
| ५) महेता मणीलाल वेलशीभाइ.  |                  | साणंद   |
| ५) बेन शमु.                |                  | दहेगाम  |

## अनुक्रमणिका.

| नंबर. | विषय.                     | पृष्ठांक.  |
|-------|---------------------------|------------|
| १     | श्री शत्रुंजय लघुकल्प     | १ थी ४     |
| २     | श्री लघुक्षेत्र समास      | ४ थी ३७    |
| ३     | श्री बृहत् संग्रहणी       | ३८ थी ८१   |
| ४     | श्री अभव्य कुलकम्         | ८१ थी ८२   |
| ५     | श्री पुण्य कुलकम्         | ८२ थी ८४   |
| ६     | श्री पुण्य पाप कुलकम्     | ८४ थी ८६   |
| ७     | श्री गौतम कुलकम्          | ८६ थी ८९   |
| ८     | श्री दान कुलकम्           | ८९ थी ९१   |
| ९     | श्री शील कुलकम्           | ९२ थी ९४   |
| १०    | श्री तप कुलकम्            | ९४ थी ९७   |
| ११    | श्री भाव कुलकम्           | ९७ थी ९९   |
| १२    | श्री मिथ्यात्व कुलकम्     | ९९ थी १०२  |
| १३    | श्री आत्म कुलकम्          | १०३ थी १०८ |
| १४    | श्री समवसरण प्रकरण        | १०८ थी १११ |
| १५    | श्री ग्रहशान्ति स्तोत्रम् | १११ थी ११२ |



# જાહેર

અમારે ત્યાંથી જૈનધર્મની હસ્તલિખિત પ્રતો તથા છાપેલી પ્રત આકારની સંસ્કૃત, પ્રાકૃત, માગધી પોથીઓ અને સંસ્કૃત, હિંદી તથા ગુજરાતી ભાષાના દરેક જાતના પુસ્તકો મળી શકશે.

તથા

ઉન, ચરવળા, કટાસણા, ચાપડા, નોકારવાળીઓ, સિદ્ધચક્રજીના ગટા તથા સામાયિક કરવાની ૪૮ મીનીટની તથા ૬૦ મીનીટની ઘડીઓ તથા રંગીન રેશમ તથા તીર્થોના રંગીન નકશાઓ તથા ફોટાઓ વિગેરે છુટક તથા જથ્થાબંધ મળી શકશે.

લખો:

મહેતા નાગરદાસ પ્રાગજીઝાઈ.

ઠે. ઢોશીવાડાનો પોઝ, અમદાવાદ.

તથા

સંઘવી મુલ્લજીઝાઈ ઝવેરચંદ.

જૈન બુકસેલર, પાલીતાણા.

# श्री शत्रुंजय लघुकल्प.



अश्मुत्तय केवलिणा, कहिअं सेतुंज तित्थ-  
माहप्पं ॥ नारयरिसिस्स पुरअओ, तं निसुणह  
जावउं जविआ ॥ १ ॥ सेतुंजे पुंरुअओ, सिद्धो  
मुणिकोमीपंचसंजुत्तो । चित्तस्स पुण्णिमाए, सो  
जएणइ तेण पुंरुअओ ॥ २ ॥ नमिविनमिरायाणो,  
सिद्धा कोमिहि दोहिं साहूणं । तह दविमवाली  
खिद्धा, निबुआ दसय कोमिअओ ॥ ३ ॥ पज्जुन्न  
संब पमुहा, अद्धुद्धाओ कुमारकोमीओ । तह  
पंरुवा वि पंच य, सिद्धिगया नारयरिसीय ॥ ४ ॥  
थावच्चा सुय सेलगा य, मुण्णिणो वि तह राम-  
मुणि । जरहो दसरहपुत्तो, सिद्धा वंदामि सेतुंजे  
॥ ५ ॥ अन्नेवि खवियमोहा, उसजाइ विसाल-  
वंससंजूआ । जे सिद्धा सेतुंजे, तं नमह मुणी  
असंखिज्जा ॥ ६ ॥ पन्नास जोयणाइं, आसी सेतुंजे  
विठ्ठमो मूले । दस जोयण सिहरतले, उच्चत्तं

जोयणा अट्ट ॥ ७ ॥ जं लहइ अन्न तिन्हे, उग्गेण  
 तवेण बंजचरेण । तं लहइ पयत्तेणं, सेत्तुंज-गि-  
 रिम्मि निवसंते ॥ ७ ॥ जं कोमीए पुन्नं, कामिय-  
 आहारजोइआ जे उ । तं लहइ तन्न पुन्नं, एगो-  
 ववासेण सेत्तुंजे ॥ ८ ॥ जं किंचि नाम तिन्नं, सग्गे  
 पायाखे माणुसे लोए । तं सव्वमेव दिठ्ठं, पुंरुरिए  
 वंदिए संते ॥ ९ ॥ पम्मिलान्तंते संघं, दिठ्ठमदिठ्ठे  
 य साहू सेत्तंजे । कोमिगुणं च अदिठ्ठे, दिठ्ठे य  
 अणंतयं होइ ॥ १० ॥ केवलनाणुप्पत्ती, निव्वाणं  
 आसि जन्न साहूणं । पुंरुरिए वंदित्ता, सव्वे ते  
 वंदिया तन्न ॥ ११ ॥ अट्ठावय-संमेए, पावा-चंपाइ  
 उल्लितनगे य । वंदित्ता पुन्नफलं, सयगुणं तंपि  
 पुंरुरिए ॥ १२ ॥ पूआकरणे पुन्नं, एगगुणं सयगुणं  
 च पम्मिमाए । जिणन्नवणेण सहस्सं, णंतगुणं  
 पालणे होइ ॥ १३ ॥ पम्मिमं चेइहरं वा, सित्तुंज-  
 गिरिस्स मन्नए कुणइ । उत्तूण जरहवासं, वसइ  
 सग्गेण निरुवसग्गे ॥ १४ ॥ नवकार १ पोरसीए २,  
 पुरिमढे ३ गासणं ४ च आयामं ५ । पुंरुरियं

च सरंतो, फलकंखी कुणइ अजत्तठं ६ ॥ १६ ॥  
 ठठ्ठमदसमडुवालसाणं, मासद्धमासखमणाणं ।  
 तिगरणसुद्धो लहइ, सित्तुंजं संजरंतो अ ॥ १७ ॥  
 ठठ्ठेणं जत्तेणं, अप्पाणेणं तु सत्त जत्ताइं । जो  
 कुणइ सेत्तुंजे, तइयजवे लहइ सो मुखं ॥ १८ ॥  
 अज्जावि दीसइ लोए, जत्तं चइऊण पुंररीयनगे ।  
 सगगे सुहेण वच्चइ, सीलविहुणो विहोऊणं ॥ १९ ॥  
 ठत्तं ऊयं पमागं, चामर जिंगाण थालदाणेण ।  
 विज्जाहरो अ हवइ, तह चक्की होइ रहदाणा  
 ॥ २० ॥ दस वीस तीस चत्ताल—पन्नासा पुप्फदा-  
 मदाणेण । लहइ चउठठठ्ठमदसम डुवालस फलाइं  
 ॥ २१ ॥ धूवे पक्खुववासो, मासखमणं, कपूरधूव-  
 म्मि । कित्तियमासखमणं साहु पम्पिलाजिए  
 लहइ ॥ २२ ॥ नवि तं सुवन्नचूमी—चूसणदाणेण  
 अन्नतिठेसु । जं पावइ पुन्नफलं, पूआ न्हवणेण  
 सित्तुंजे ॥ २३ ॥ कंतार चोर सावय—समुद दारिद  
 रोग रिउ रुद्धा । मुच्चंति अविग्घेणं, जे सेत्तुंजं धरंति  
 मणे ॥ २४ ॥ सारावली पयन्नग—गाहाउसूअहरेण

नणिआउ । जो पढइ गुणइ निसुणइ, सो लहइ  
सित्तुंजजत्तफलं ॥ २५ ॥

—\*—  
श्रीरत्नशेखरसूरिकृत—

## श्रीलघुक्षेत्रसमासप्रकरणम्

वीरं जयसेहरपय—पइद्विअं पणमिऊण सु  
—(स) गुरुं च । मंडु त्ति ससरणट्ठा, खित्तविआरा-  
ऽणमुंढामि ॥१॥ तिरिणगरज्जुखित्ते, असंखदीवो-  
दहीउ ते सवे । उऊारपल्लिअपणवीस—कोमि-  
कोमीसमयतुद्धा ॥२॥ कुरुसगदिणाविअंगुल—रोमे  
सगवारविहिअअरुखंमे । बावन्नसयं सहस्सा,  
सगणउई वीसलखाणू ॥३॥ ते थूला पट्ठे वि हु,  
संखिज्जा चेव हुंति सवेऽवि । ते इक्किअ असंखे,  
सुहमे खंमे पकप्पेह ॥४॥ सुहमाणुणिचिअउस्से  
—हंगुलचउकोसपल्लिघणवट्ठे । पइसमयमणुगहनि  
—द्विअम्मि उऊारपल्लिउ त्ति ॥५॥ पढमो जंबू

बीजं, धायश्संमो अ पुरकरो तश्च । वारुणिवरो  
 चउडो, खीरवरो पंचमो दीवो ॥६॥ घयवरदीवो  
 षट्ठो, इक्खुरसो सत्तमो अ अट्ठमत्तं । नंदीसरो  
 अ अरुणो, एवमो इच्चाइसंखिज्जा ॥७॥ सुपसब्ब-  
 वड्डुणामा, तिपफोअारा तहाऽरुणाईआ । इगणामे-  
 ऽवि असंखा, जाव य सूरावजास त्ति ॥८॥ तत्तो  
 देवे नागे, जस्के नूए सयंचुरमणेअ । एए पंच  
 वि दीवा, इगेगणामा मुणेअवा ॥९॥ पढमे लवणो  
 बीए, काळोदहि सेसएसु सवेसु । दीवसमना-  
 मया जा, सयंचुरमणोदही चरमो ॥१०॥ बीजं  
 तश्च चरमो, उदगरसा पढमचउडपंचमगा ।  
 षट्ठोऽवि सनामरसा, इक्खुरसा सेसजलनिहिणो  
 ॥११॥ जंबुदीव पमाणं—गुलिजोअणलस्कवट्टवि-  
 स्कंजो । लवणाईआ सेसा, वलयाजा दुगुणदुगुणा  
 य ॥१२॥ वयरामईहिं णिअणिअ—दीवोदहि-  
 मज्जगणिअमूलाहिं । अट्ठुच्चाहिं बारस—चउमूले-  
 उवरिरुंदाहिं ॥१३॥ विठ्ठारदुगविसेसो, उस्सेहवि-  
 जत्तखत्तं चत्तं होइ । इअ चूलागिरिकूमा—तुल्ल-

विस्कंजकरणाहिं ॥१४॥ गाजदुगुच्चाइ तय-दुजा-  
 गरुंदाइ पउमवेईए । देसूणदुजोअणवर-वणाई  
 परिमंमिअसिराहिं ॥१५॥ वेईसमेण महया, गव-  
 स्ककरुएण संपरित्ताहिं । अट्टारसूणचउजत्त-  
 परहिदारंतराहिं च ॥१६॥ अट्टच्चचउसुविठर-  
 दुपाससक्कोसकुम्भदाराहिं । पुवाइमहद्धिअ-देवा-  
 दारविजयाइनामाहिं ॥१७॥ णाणामणिमयदेहलि-  
 -कवारुपरिघाइदारसोहाहिं । जगईहिं ते सबे,  
 दीवोदहिणो परिस्कत्ता ॥१८॥ वरतिणतोरण-  
 उऊयठ-त्तवाधिपासायसेलसिलवट्टे । वेइवणे वर-  
 मंरुव-गिहासणेसुं रमंति सुरा ॥१९॥ इह अहि-  
 गारो जेसिं, सुराण देवीण ताणमुप्पत्ती । णिअ-  
 दीवोदहिणामे, असंखइमे सणयरीसु ॥२०॥ जंबू-  
 दीवो ठहिं कुल-गिरिहिं सत्तहिं तहेव वासेहिं ।  
 पुवावरदीहेहिं, परिठिन्नो ते इमे कमसो ॥२१॥  
 हिमवंसिहरी महहिमव-रुप्पि णिसढोअ णील-  
 वंतो अ । बाहिरउं दुदु गिरिणो, उज्जउं वि

सवेइया सवे ॥२१॥ जरहेरवय त्ति दुगं, दुगं च  
 हेमवयरणवयरुवं । हरिवासरम्मयदुगं, मज्झि  
 विदेहु त्ति सग वासा ॥२३॥ दो दीहा चउ वट्ठा,  
 वेअट्ठा खित्तठक्कमज्जम्मि । मेरु विदेहमज्जे,  
 पमाणमित्तो कुलगिरीणं ॥२४॥ इगदोचउसयउच्चा,  
 कणगमया कणगरायया कमसो । तवणिज्जासुवेरु-  
 लिआ, बहिमज्जब्भित्तरा दो दो ॥२५॥ दुग-  
 अरुदुतीस अंका, लखगुणा कमेण नउअसय-  
 जइया । मूलोवरि समरुवं, विहारं बिंति जुअल-  
 तिगे ॥२६॥ बावणणिहिउं सहसो, बार कला बाहि-  
 राण विहारो । मज्झिमगाण दसुत्तर-बायालसया  
 दस कला य ॥२७॥ अब्भित्तराण दुकला, सोल-  
 सहस्सरुसया सबायला । चउचत्तसहस्स दो सय,  
 दसुत्तरा दस कला सवे ॥२८॥ इगचउसोलसंका,  
 पुव्वुत्तविही अ खित्तजुअलतिगे । विहारं बिंति  
 तहा, चउसट्ठिको विदेहस्स ॥२९॥ पंचसया ठवीसा,  
 ठच्च कला खित्तपढमजुअलम्मि । बीए इगवीस-  
 सया, पणुत्तरा पंच य कला य ॥३०॥ चुलसीसय

श्गवीसा, श्ककला तश्चगे विदेहि पुणो । तित्ती-  
 ससहस ठसय, चुलसीआ तहा कला चउरो  
 ॥३१॥ पणपन्नसहस सग सय, गुणणउआ एव  
 कला सयलवासा । गिरिखित्तंकसमासे, जोअण-  
 लखं हवइ पुणं ॥३२॥ पणणाससुद्ध बाहिर-  
 खित्ते दलिअम्मि दुसय अरुतीसा । तिणिण य  
 कला य एसो, खंरुचउक्कस्स विस्कंजो ॥३३॥  
 गिरिउवरि सवेइदहा, गिरिचत्ताउ दसगुणा दीहा ।  
 दीहत्तअरुंदा, सवे दसजोअणुवेहा ॥३४॥ बहि  
 पउमपुंरुयीया, मज्झे ते चेव हुंति महपुवा । तेग-  
 ळिकेसरीआ, अञ्जितरिआ कमेणेसुं ॥३५॥  
 सिरिल्लही हिरिबुद्धी, धीकित्ती नामियाउ देवीउ ।  
 जवणवईउ पलिउ-वमाउ वरकमलणिलयाउ  
 ॥३६॥ जलुवरि कोसदुगुच्चं, दह विठरपणसयंसवि-  
 ञ्जारं । बाह्वे विठरुं, कमलं देवीण मूलिह्वं  
 ॥३७॥ मूले कंदे नाले, तंवयरारिट्ठवेरुलिअरूवं ।  
 जंबुणयमज्जतवणी-ज्जावहिअदलं रत्तकेसरिअं  
 ॥३८॥ कमलरूपायंपिहुलु-च्चकणगमयकणिणगोवरिं

नवणं । अङ्गेगकोसपिहुदी-हचउदसयचालधणु-  
 हुच्चं ॥३९॥ पष्ठिमदिसि त्रिणु धणुपण-सय उच्च  
 ढाङ्गसय पिहुपवेसं । दारतिगं इह नवणे, मज्जे  
 दहदेविसयणिज्जं ॥४०॥ तं मूलकमलळप्प-माण-  
 कमलाण अरुहिअसएणं । परिखित्तं तब्बनवणे-  
 सुचूसणाईणि देवीणं ॥ ४१ ॥ मूलपउमाउ पुर्वि,  
 महयरियाणं चउण्ह चउ पउमा । अवराइ सत्त  
 पउमा, अणिआहिवईण सत्तण्हं ॥४२॥ वायवाइसु  
 तिसु सुरि-सामएणसुराण चउसहस पउमा ।  
 अट्टदसवारसहसा, अग्गेआइसु तिपरिसाणं ॥४३॥  
 इअ बीअपरिस्केवो, तइए चउसु वि दिसासु  
 देवीणं । चउ चउ पउमसहस्सा, सोलससहसा-  
 ऽऽयरस्काणं ॥४४॥ अज्जिउंगाइ तिवलए, दुतीस-  
 चत्तारुयाललस्काइ । इगकोमि वीस लस्का, सट्ठा  
 वीसं सयं सवे ॥४५॥ पुवावरमेरुमुहं, दुसु दार-  
 तिगं पि सदिसि दहमाणा । असिईजागपमाणं,  
 सतोरणं णिग्गयणईअं ॥४६॥ जामुत्तरदारदुगं,  
 सेसेसु दहेसु ताण मेरुमुहा । सदिसि दहासिअ-

ज्ञागा, तयऊमाणा य बाहिरिया ॥४७॥ गंगा  
 सिंधू रत्ता, रत्तवई बाहिरं णइच्चउकं । बहिदह-  
 पुवावरदा-रविठ्ठरं वहइ गिरिसिहरे ॥४८॥ पंच  
 सय गंतु णिअगा-वत्तणकूमाउ बहिमुहं वलइ ।  
 पणसयतेवीसेहिं, साहिअतिकलाहिं सिहराउ  
 ॥४९॥ णिवरइ मगरमुहोवम-वयरामयजिब्जि-  
 आइवयरतले । णिअगे णिवायकुंमे, मुत्तावलि-  
 समप्पवाहेण ॥५०॥ दहदारविठ्ठराउ, विठ्ठरपण्णा-  
 सज्ञागजझाउ । जझत्ताउ चउगुण-दीहाउ सब-  
 जिब्जीउ ॥५१॥ कुंमंतो अरुजोअण-पिहुलो  
 जलउवरि कोसटुगमुच्चो । वेइजुउ णइदेवी-दोवो  
 दहदेविसमजवणो ॥५२॥ जोअणसट्ठिपिहुत्ता,  
 सवायठप्पिहुलवेइतिटुवारा । एए दसुंर कुंमा,  
 एवं अण्णे वि णवरं ते ॥५३॥ एसिं विठ्ठारतिगं,  
 परुच्च समटुगुणचउगुणट्टगुणा । चउसट्ठिसोलच-  
 उदो, कुंमा सवेवि इह णवई ॥५४॥ एअं च णइ-  
 चउकं, कुंमाउ बहिटुवारपरिवूढं । सगसहसणइ-  
 समेअं, वेअट्टगिरिं पिज्जिदेइ ॥५५॥ तत्तो बाहिर-

खित्त-ऊमज्जुत्त वलइ पुव्वअवरमुहं । एइसत्त-  
 सहससहिअं, जगइतलेणं उदहिमेइ ॥५६॥ धुरि  
 कुंरुदुवारसमा, पज्जंते दसगुणाय पिहुलत्ते । सब्ब  
 महणईउं, विव्वरपण्णासज्जागुंका ॥५७॥ पणखित्त-  
 महणईउं, सदारादिसि दहविसुऊगिरिअऊं ।  
 गंतूण सजिब्जीहिं, णिअणिअकुंसेसु णिवरुंति  
 ॥५८॥ णिअजिब्जिअपिहुलत्ता, पणवीसंसेण मुत्तु  
 मज्जगिरिं । जाममुहा पुव्वुदहिं, इअरा अवरो-  
 अहिमुविंति ॥५९॥ हेमवइ रोहिअंसा, रोहिआ  
 गंगदुगुणपरिवारा । एरणवए सुवण्ण-रुप्पकूलोत्तं  
 ताण समा ॥६०॥ हरिवासे हरिकंता, हरिसल्लिखा  
 गंगचउगुणणईआ । एसि समारम्मयए, एरकंता  
 णारिकंता य ॥६१॥ सीउंआ सीआउं, महाविदे-  
 हम्मि तासु पत्तेयं । णिवरुइ पणलस्क दुती-  
 ससहस अरुतीस एइसल्लिखं ॥६२॥ कुरुणइ  
 चुलसीसहसा, ठच्चेवंतरणईउ पइविजयं । दो दो  
 महाणईउं, चउदसहस्सा उ पत्तेयं ॥६३॥ अरु-  
 सयरि महणईउं, बारस अंतरणईउ सेसाउं ।

परिअरणई चउहस, लरका ठप्पण सहसा य  
 ॥६४॥ एगारुणवकूडा, कुलगिरिजुअलत्तिगे वि  
 पत्तेअं । इइ ठप्पण चउ चउ, वरुकारेसु त्ति  
 चउसट्ठी ॥६५॥ सोमणसगंधमाइणि, सग सग  
 विज्जुप्पत्तिमालवंति पुणो । अट्ठट्ठ सयल तीसं,  
 अरु णंदणि अट्ठ करिकूमा ॥६६॥ इअ पणसय-  
 उच्च ठासट्ठि-सउ (य) कूमा तेसु दीहरगिरीणं ।  
 पुव्वणइ मेरुदिसि, अंतसिद्धकूमेसु जिणन्नवणा  
 ॥६७॥ ते सिरिगिहाउ दोसय-गुणप्पमाणा तहेव  
 तिडुवारा । एवरं अरुवीसाहिअ-सयगुणदारप्प-  
 माणमिहं ॥६८॥ पणवीसं कोससयं, समचउरस-  
 विठ्ठमा डुगुणमुच्चा । पासाया कूमेसु, पणसयउच्चेसु  
 सेसेसु ॥६९॥ बलहरिस्सहहरिकूमा, णंदणवणि  
 मालवंति विज्जुपत्ते । ईसाणुत्तरदाहिण-दिसासु  
 सहसुच्च कणगमया ॥७०॥ वेअट्ठेसु वि एव एव,  
 कूमा पणवीसकोसउच्चा ते । सवे तिसय ठरुत्तर,  
 एसु वि पुवंति जिणकूमा ॥७१॥ ताणुवरिं चेइ-  
 हरा, दहदेवीजवणतुल्लपरिमाणा । सेसेसु अ

पासाया, अङ्गेगकोसं पिहुच्चत्ते ॥७१॥ गिरिकरिकूडा  
 उच्च-त्तणाउ समअरुमूळुवरिंदा । रयणमया  
 णवरि विश्र-हूमज्जिमा तिति कणगरूवा ॥७३॥  
 जंबूणयरययमया, जगइसमा जंबुसामलीकूमा ।  
 अट्टट्ट तेसु दहदेवी-गिहसमा चारुचेइहरा ॥७४॥  
 तेसि समांसहकूमा, चउतीसं चुल्लकुंरुजुअलंतो ।  
 जंबूणएसु तेसु अ, वेअट्ठेसुं व पासाया  
 ॥७५॥ पंचसए पणवीसे, कूमा सबे वि जंबुदीव-  
 म्मि । ते पंचेअं वरवण-जुआहि वेईहिं परि-  
 खित्ता ॥७६॥ ठसयरिकूमेसु तहा, चूला चउ-  
 वणतरूसु जिणन्नवणा । नणिया जंबुदीवे, सदेवया  
 सेसठाणेसु ॥७७॥ करिकूरुकुंरुणइदह-कुरुकंचण-  
 यमलसमविअट्ठेसु । जिणन्नवणविसंवाउ, जो तं  
 जाणंति गीअत्ता ॥७८॥ पुढावरजलहिंता, दसु-  
 च्चदसपिहुलमेहलचउक्का । पणवीसुच्चा पण्णा-  
 सतीसदसजोअणपिहुत्ता ॥७९॥ वेईहिं परिखित्ता,  
 सखयरपुरपणसट्ठिसेण्डुगा । सदिसिंदलोग-  
 पालो-वज्जोगि उवरिल्लमेहलया ॥८०॥ डुडुखंरु-

विहिअजरहे-रवया दुदुगुरुगुहा य रूपमया ।  
 दो दीहा वेअमू, तहा दुतीसं च विजएसु ॥७१॥  
 एवरं ते विजयंता, सखयरपणपणपुरदुसेणीआ ।  
 एवं खयरपुराई, सगतीससयाई चालाई ॥७२॥  
 गिरिविठरदीहाउं, अमुच्चचउपिहुपवेसदाराउं ।  
 बारसपिहुलाउ अमु-च्चयाउ वेअमू दुगुहाउं  
 ॥७३॥ तम्मज्जुजोअणअं-तराउ तितिविठराउ  
 दुणईउं । उम्मग्गनिमग्गाउं, करुगाउ महाणई-  
 गयाउं ॥७४॥ इह पइजित्ति गुणव-एणमंखे  
 लिहइ चक्कि दुदुसमुहे । पणसयधणुहपमाणे, बारे-  
 गरुजोअणुज्जोए ॥७५॥ सा तमिसगुहा जीए,  
 चक्को पविसेइ मज्जखंमंतो । उसहं अंकिअ सो  
 जी-ए वलइ सा खंरुगपवाया ॥७६॥ कयमाल-  
 नट्टमालय-सुराउ वरुइणिवरुसलिलाउ । जा  
 चक्को ता चिट्ठंति, ताउं उग्घमियदाराउं ॥७७॥  
 बहिखंमंतो बारस-दीहा नवविठरु अउज्जुपुरी ।  
 सा लवणा वेअमू, चउदहिअसयं चिगारकला

॥७७॥ चक्रिवसणश्पवेसे, तिष्ठदुगं मागहो पचासो  
 अ । ताणंतो वरदामो, इह सवे विमुत्तरसयं ति  
 ॥७८॥ ज़रहेरवए ठठअर-यमयावसप्पिणिउस-  
 प्पिणीरूवं । परिजमइ कालचक्रं, दुवालसारंसया  
 वि कमा ॥७९॥ सुसमसुसमा य सुसमा, सुसम-  
 दुसमा य दुसमसुसमा य । दुसमा य दुसमदुसमा,  
 कमुकमा दुसु वि अरठक्रं ॥८०॥ पुव्वुत्तपह्विसम-  
 सय-अणुग्गहणा णिट्ठिए हवइ पलिउ । दस-  
 कोमिकोमिपलिए-हिं सागरो होइ कालस्स ॥८१॥  
 सागरचउतिदुकोमा-कोमिमिए अर तिगे नराण  
 कमा । आज्ज तिदुइगपल्लिया, तिदुइगकोसा  
 तणुच्चत्तं ॥८२॥ तिदुइगदिणेहिं तुबरि-बयरा-  
 मलमित्तु तेसिमाहारो । पिट्ठकरंमा दोसय, ठप्प-  
 एणा तइलं च दलं ॥८३॥ गुणवण्णदिणे तह  
 पनर-पणरअहिए अवच्चपालण्या । अवि सयल-  
 जिआ जुअला, सुमण सुरूवा य सुरगइआ ॥८४॥  
 तेसि मत्तंग १ त्रिंगा २ तुमिअंगा ३ जोइ ४ दीव

५ चित्तंगा ६ । चित्तरसा ७ मणिश्रंगा ८ गेहा-  
 गारा ९ अणिश्रयस्का १० ॥ ए६ ॥ पाणं १  
 ज्ञायण २ पिहण ३, रविपह ४ दीवपह ५ कुसुम  
 ६ माहारो ७ । जूसण ८ गिह ९ वञ्चासण १०,  
 कप्पटुमा दसविहा दिंति ॥ए७॥ मणुआउसम  
 गयाई, हयाइ चउरंसजाइ अटुंसा । गोमहिसुट-  
 खराई, पणंस साणाइ दसमंसा ॥ए८॥ इच्चाइ तिर-  
 ष्ठाण वि, पायं सवारएसु सारिहं । तइआरसेसि  
 कुलगर-णयजिणधम्माइ उप्पत्ती ॥ए९॥ काल-  
 दुगे तिचउठा-रगेसु एगूणणवइपरकेसु । सेसि  
 गएसुं सिज्जं-ति हुंति पढमंतिमजिणिंदा ॥१०॥  
 बायालसहसवरसू-णिगकोमाकोमिश्रयरमाणे  
 तुरिए नराउ पुवा-ण कोमि तणु कोसचउरंसं  
 ॥१०१॥ वरिसेगवीससहस-प्पमाणपंचमरेसगक-  
 रुच्चा । तीसहिअसयाउ णरा, तयंति धम्माइ-  
 आणंतो ॥१०२॥ खारगिविसाईहिं, हाहाजूसूआ-  
 कयाइपुहवीए । खगवीय विश्रकूइसु, णराइवीयं

बिलाईसु ॥१०३॥ बहुमहचक्रवहणइ-चउकपासेसु  
 एव एव बिलाई । वेअमूजयपासे, चउआलसयं  
 बिलाणेवं ॥१०४॥ पंचमसमठट्टारे, डुकरुच्चा वीसव-  
 रिसआउ णरा । मञ्जासिणो कुरुवा, कूरा बिलवासि  
 कुगइगमा ॥१०५॥ णिव्वज्जा णिव्वसणा, खरवयणा  
 पिअसुआइठिइरहिआ । थीउं ठवरिसगब्जा,  
 अइडुहपसवा बहुसुआ य ॥१०६॥ इअ अरठक्के-  
 णवस-प्पिणि त्तिउंसप्पिणी वि विवरीआ । वीसं  
 सागरकोमा-कोमीओ कालचक्कम्मि ॥१०७॥ कुरु-  
 डुगि हरिरम्मयडुगि, हेमवएरणवइडुगि विदेहे ।  
 कमसो सयावसप्पिणि, अरयचउक्काइसमकालो  
 ॥ १०८ ॥ हेमवएरणवए, हरिवासे रम्मए य रय-  
 णमया । सदावइ विअमावइ, गंधावइ मालवंत-  
 क्खा ॥ १०९ ॥ चउवट्टविअट्टासा-इअरुणपउम-  
 प्पजाससुरवासा । मूलुवरि पिहुत्ते तह, उच्चत्ते जो-  
 यणसहस्सं ॥ ११० ॥ मेरू वट्टो सहस्स-कंदो ल-  
 वसूसिओ सहस्सुवरिं । दसगुण जुवि तं सणवइ,  
 दसिगारंसं पिहुलमूले ॥ १११ ॥ पुढुवुलवयरसकर-

मयकंदो उवरि जाव सोमणसं । फलिहंकरययकं-  
 चण-मओ अ जंबूणओ सेसो ॥११२॥ तटुवरि  
 चालीसुच्चा, वट्टा मूळुवरि बार चउ पिहुला । वे-  
 रुलिया वरचूला, सिरिजवणपमाणचेइहरा ॥११३॥  
 चूलातलाउ चउसय, चउणवई वलयरूवविकखं-  
 जं । बहुजलकुंरुं पंरुग-वणं च सिहरे सवेईअं ॥११४॥  
 पण्णसजोअणेहिं, चूलाओ चउदिसासु जिणज-  
 वणा । सविदिसि सकीसाणं, चउवाविजुआ य पा-  
 साया ॥११५॥ कुलगिरिवेइहराणं, पासायाणं चिमे  
 समट्टगुणा । पणवीसरुंदट्टगुणा-यामाउ इमाउ वा-  
 वीओ ॥११६॥ जिणहरबहिदिसि जोअण-पण-  
 सय दीहळुपिहुल चउउच्चा । अळुससिसमा च-  
 उरो, सिअकणयसिला सवेईआ ॥११७॥ सिल-  
 माणट्टसहस्सं-समाणसीहासणेहिं दोहिं जुआ ।  
 सिल पंडुकंबला र-त्तकंबला पुव्वपष्ठिमओ ॥११८॥  
 जामुत्तराउ ताओ, इगेगसीहासणाउ अइपुव्वा ।  
 चउसु वि तासु नियासण-दिसि जवजिणमज्झ-  
 णं होइ ॥११९॥ सिहरा ठत्तीसेहिं, सहसेहिं मे-

हलाइ पंच सए। पिहुलं सोमणसवणं, सिलविणु  
 पंरुगवणसरिञ्चं ॥ १२० ॥ तब्बाहिरि विक्खंजो,  
 बायालसयाइं दुसयरि जुआइं । अट्ठेगारसजागा,  
 मज्जे तं चेव सहसूणं ॥ १२१ ॥ तत्तो महुदुसट्ठी-  
 सहसेहिं णंदणं पि तह चेव । णवरि जवणपा-  
 सायं-तरट्ठ दिसि कुमरिकूमा वि ॥ १२२ ॥ ण-  
 वसहस णवसयाइं, चउपणणा ठच्चिगारहाया य ।  
 णंदणवहिविक्खंजो, सहसूणो होइ मज्जम्मि ॥  
 ॥ १२३ ॥ तदहो पंचसएहिं महिअलि तह चेव  
 जइसालवणं । णवरमिह दिग्गइ च्चिअ, कूमा व-  
 णवित्थरं तु इमं ॥ १२४ ॥ बावीस सहस्साइं, मे-  
 रूअो पुव्वअो अ पन्निमअो । तं चारुसोविहत्तं,  
 वणमाणं दाहिणुत्तरअो ॥ १२५ ॥ ठव्वीस सहस  
 चउ सय, पणहत्तरि गंतु कुरुणइपवाया । उज्जअो  
 विणिग्गया गय-दंता मेरुम्मुहा चउरो ॥ १२६ ॥  
 अग्गेआइसु पयाहि-णेण सिअरत्तपीअनीलान्ना ।  
 सोमणसविज्जुप्पह-गंधमायण मालवंतक्खा ॥ १२७ ॥  
 अहलोयवासिणीअो, दिसाकुमारोउ अट्ठ ए-

एसिं । गयदंतगिरिवराणं, हिट्ठा चिट्ठंति जवणेसु  
 ॥ १२७ ॥ धुरि अंते चउपणसय, उच्चत्ति पिहुत्ति  
 पणसयाऽसिसमा दोहत्ति इमे ठकला, झसय ण-  
 वुत्तर सहसतोसं ॥ १२८ ॥ ताणंतो देवुत्तर-कुराज  
 चंदळसंठियाज पुवे । दससहसविसुद्धमहा-विदे-  
 हदलमाणपिहुलाओ ॥ १२९ ॥ णइपुवावरकूले,  
 कणगमया बलसमा गिरी दो दो । उत्तरकुराज  
 जमगा, विचित्तचित्ता य इअरीए ॥ १३० ॥ ण-  
 इवहदीहा पण पण, हरया पुपुदारया इमे कम-  
 सो । णिसहो तह देवकुरु, सूरु सुलसो य वि-  
 ज्जुपजो ॥ १३१ ॥ तह णीलवंत उत्तर-कुरु चं-  
 देरवय मालवंतु त्ति । पउमदहसमा णवरं, एएसु  
 सुरा दहसमाणा ॥ १३२ ॥ अरु सय चउतीस  
 जोअ-णाइं तह सेगसत्तजागाओ । इक्कारस य  
 कलाओ, गिरिजमलदहाणमंतरयं ॥ १३३ ॥ द-  
 हपुवावरदसजो-यणेहि दस दस विश्वमूकूमाणं ।  
 सोलसगुणप्पमाणा, कंचणगिरिणो पुसय सवे ॥  
 ॥ १३४ ॥ उत्तरकुरुपुवळे, जंबूणय जंबुपीढमंतेसु ।

कोसद्रुगुच्चं कमि व-रूमाणु चउवीसगुणं मज्जे  
 ॥१३६॥ पणसयवट्ठपिहुत्तं, परिखित्तं, तं च पउ-  
 मवेईए । गाउद्रुगधुच्चपिहु-त्तचारुचउदारकलि-  
 आए ॥ १३७ ॥ तं मज्जे अरुवित्थर-चउच्चम-  
 णिपी ढिआइ जंबुतरू । मूले कंदे खंधे, वरवय-  
 रारिट्ठवेरुलिए ॥१३८॥ तस्स य साहपसाहा, दला  
 य बिंटा य पद्धवा कमसो । सोवणणजायरूवा,  
 वेरुलितवणिज्जाजंबुणया ॥ १३९ ॥ सो रययमय-  
 पवालो, राययविमिमो य रयणपुप्फफलो । को-  
 सद्रुगं उव्वेहे, थुरुसाहाविमिमविकखंजो ॥१४०॥  
 थुरुसाहविडिमदीह-त्ति गाउए अट्ठपणरचउ-  
 वीसं । साहा सिरिसमजवणा, तम्माणसचेइअं  
 विमिमं ॥ १४१ ॥ पुविद्ध सिज्जा तिसु आ-स-  
 णाणि जवणेषु णाढिअसुरस्स । सा जंबू बार-  
 सवे-इआहिं कमसोपरिखित्ता ॥ १४२ ॥ दह-  
 पउमाणं जं वि-ठ्ठरं तु तमिहावि जंबूरुक्खाणं ।  
 नवरं महयरियाणं, ठाणे इह अग्गमहिंसीओ  
 ॥ १४३ ॥ कोसद्रुसएहिं जंबू, चउद्विसिं पुवसा-

लसमजवणा । विदिसासु सेसतिसमा, चउवावि-  
 जुया य पासाया ॥ १४४ ॥ ताणंतरेसु अरु जि-  
 ण-कूमा तह सुरकूराइ अवरुद्धे । राययपीढे सा-  
 मलि-रुखो एमेव गरुलस्स ॥ १४५ ॥ बत्तीस  
 सोल बारस, विजया वक्खार अंतरणईओ । मे-  
 रुवणाओ पुवा-वरासु कुलगिरिमहणयंता ॥ १४६ ॥  
 विजयाण पिहुत्ति सग-ट्टजाग बारुत्तरा पुवीस-  
 सया । सेलाणं पंचसए, सवेइणइ पन्नवीससयं  
 ॥ १४७ ॥ सोलससहस्स पणसय, बाणउआ तह  
 य दो कलाओ य । एएसिं सबेसिं, आयामो व-  
 णमुहाणं च ॥ १४८ ॥ गयदंतगिरिव्वुच्चा, व-  
 क्खारा ताणमंतरणईणं । विजयाणं च जिहाणा-  
 ईं मालवंता पयाहिणओ ॥ १४९ ॥ चित्ते १ य  
 बंजकूमे २ णलिणीकूमे ३ य एगसेले ४ य । ति-  
 उमे ५ वेसमणे ७ वि य, अंजण ७ मायंजणे ८  
 चेव ॥ १५० ॥ अंकावइ ए पम्हावइ १० आसी-  
 विस ११ तह सुहावहे १२ चंदे १३ । सूरे १४  
 णागे १५ देवे १६, सोलस वक्खारगिरिष्णामा

॥ १५१ ॥ गाढावई १ दहवई २, वेगवई ३ तत्त  
 ४ मत्त ५ उम्मत्ता ६ । खीरोय ७ सीयसोया ८,  
 तह अंतोवाहिणी ए चेव ॥ १५२ ॥ उम्मीमा-  
 लिणी १० गंजी-रमालिणी ११ फेणमालिणी १२  
 चेव । सव्वत्त वि दसजोयण-उंका कुंमुब्जवा  
 एया ॥ १५३ ॥ कच्छु १ सुकब्धो २ य महा-कब्धो  
 ३ कब्धावई ४ तहा । आवत्तो ५ मंगलावत्तो ६,  
 पुक्खलो ७ पुक्खलावई ८ ॥ १५४ ॥ वच्छु ए सुव-  
 ह्धो १० य महा-वह्धो ११ वब्धावई १२ वि य ।  
 रम्मो १३ य रम्मओ १४ चेव, रमणी १५ मंग-  
 लावई १६ ॥ १५५ ॥ पम्हु १७ सुपम्हो १८ य  
 महा-पम्हो १९ पम्हावई २० तओ । संखो २१  
 एलिणणामा २२ य, कूमुओ २३ एलिणावई २४  
 ॥ १५६ ॥ वप्पु २५ सुवप्पो २६ अ महा-वप्पो  
 २७ वप्पावइ २८ त्ति य । वग्गू २९ तहा सुवग्गू  
 ३० य, गंधिलो ३१ गंधिलावई ३२ ॥ १५७ ॥  
 एए पुद्वावरगय-विअरूदलिय त्ति एइदिसिद-  
 देसु । जरहऊपुरिसमाओ, इमेहिं णामेहिं

णयरीओ ॥ १५७ ॥ खेमा १ खेमपुरा २ वि अ,  
 अरिट्ट ३ रिट्टावई ४ य णायवा । खग्गी ५ मं-  
 जूसा ६ वि य, ओसहिपुरि ७ पुंरुरिणिणी ८ य  
 ॥१५९॥ सुसोमा ९ कुंमला १० चेव, अवराविअ  
 ११ पहंकरा १२ । अंकवइ १३ पम्हावइ १४, सु-  
 ज्ञा १५ रयणसंचया १६ ॥ १६० ॥ आसपुरा १७  
 सीहपुरा १८, महापुरा १९ चेव हवइ विजयपुरा  
 २० । अवराइया २१ य अवरा २२, असोगा २३  
 तह वीअसोगा २४ य ॥ १६१ ॥ विजया २५ य  
 वेजयंती २६, जयंति २७ अपराजिया २८ य बो-  
 धवा । चक्रपुरा २९ खग्गपुरा ३०, होइ अवज्जा  
 ३१ अउज्जा ३२ य ॥१६१॥ कुंमब्जवा उ गंगा-  
 सिंधूओ कण्ठपम्हपमुहेसु । अट्टट्टसु विजएसुं, से-  
 सेसु य रत्तरत्तवई ॥१६३॥ अविवक्खिज्जण जगई,  
 सवेइवणमुहचउक्कपिहुलत्तं । गुणतीससय डुवी-  
 सा, णइंति गिरिअंति एगक्कला ॥ १६४ ॥ पण-  
 तीस सहस चउ सय, ठमुत्तरा सयलविजयवि-  
 क्खंजो । वणमुहडुगविक्खंजो, अरुवण सया य

चोयात्ता ॥ १६५ ॥ सग सय पणणात्ता णइ-  
 पिहुत्ति चउवणण सहस मेरुवणे । गिरिविठरि  
 चउ सहसा, सवसमासो हवइ लक्खं ॥ १६६ ॥  
 जोअणसयदसगंते, समधरणीओ अहो अहो-  
 गामा । बायालीससहसेहिं, गंतुं मेरुस्स पञ्चिम-  
 ओ ॥ १६७ ॥ चउ चउतीसं च जिणा,  
 जहणणमुक्कोसओ अ हुंति कमा । हरिचक्खिवा  
 चउरो, तीसं पत्तेअमिह दीवे ॥ १६८ ॥ ससिडु-  
 गरविडुगचारो, इह दीवे तेसि चारखित्तं तु ।  
 पण सय दसुत्तराइं, इगसट्ठि हाया (जागा) य  
 अरुयात्ता ॥ १६९ ॥ पणरस चुलसीइसयं, ठप्प-  
 णणरुयात्तजागमाणाइं । ससिसूरमंरुलाइं, तयंत-  
 राणिगिगहीणाइं ॥ १७० ॥ पणतीसजोअणे जाग-  
 तीस चउरो अ जाग सगहा (जा) या । अंतर-  
 माणं ससिणो, रविणो पुण जोअणे डुणिण  
 ॥ १७१ ॥ दीवंतो असिअसए, पण पणसट्ठी अ  
 मंरुला तेसिं । तीसहिअतिसय लवणे, दसिगुण-  
 वीसं सयं कमसो ॥ १७२ ॥ ससिससिरविरवि

अन्तरि, मज्जे इगलक्खु तिसय सावूणो । साहि-  
 अटुसयरिपणचइ-बहि लक्खो ठसय सावहिओ  
 ॥ १७३ ॥ साहिअ पणसहसंतिहुत्तराइं, ससिणो  
 मुहुत्तगइ मज्जे । बावणहिआ सा बहि, पइमं-  
 रुल पणचउवुहू ॥ १७४ ॥ जा ससिणो सा  
 रविणो, अरुसयरिसणणीसीसणण हिआ । किंचू-  
 णाण अट्टार-सट्ठिहायाणमिह वुहू ॥ १७५ ॥  
 मुज्जे उदयवन्तरि, चउणवइसहस पणसय ठवी-  
 सा । बायाल सट्ठिजागा, दिणं च अट्टारसमुहुत्तं  
 ॥ १७६ ॥ पइमंरुल दिणहाणी, दुण्ह मुहुत्तेगसट्ठि-  
 जागाणं । अन्ते बारमुहुत्तं, दिणं णिसा तस्स वि-  
 वरीआ ॥ १७७ ॥ उदयवन्तरि बाहिं, सहसा ते-  
 सट्ठि ठसय तेसट्ठा । तह इगससिपरिवारे, रिक्क-  
 रुवीसारुसीइ गहा ॥ १७८ ॥ ठासट्ठि सहस एव-  
 सय, पणहत्तरि तारकोरुिकोकीणं । सणणंतरेण  
 वुस्से-हंगुलमाणेण वा हुंति ॥ १७९ ॥ गहरिक्क-  
 तारगाणं, संखं ससिसंखसंगुणं काउं । इत्थियदी-  
 वुदाहिंमि य, गहाइमाणं विआणेह ॥ १८० ॥

चउ चउ बारस बारस, लवणे तह धायइम्मि  
 ससिसुरा । परओदहिदीवेसु अ, तिगुणा पुविद्ध-  
 संजुत्ता ॥१८१॥ एरखित्तं जा समसे-णिचारिणो  
 सिग्घसिग्घतरगइणो । दिट्ठिपहमिति खित्ता-ए-  
 माणओ ते एराणेवं ॥१८२॥ पणसय सत्तत्तोसा,  
 चउतोससहस्स लखइगवीसा । पुक्करदीवहणरा,  
 पुवेण अवरेण पिहंति ॥ १८३ ॥ एरखित्तवाहिं  
 ससिरवि-संखा करणंतरेहिं वा होइ । तह तह  
 य जोइसिया, अचलरूपमाण सुविमाणा ॥१८४॥  
 इह परिहि तिलस्का, सोलसहस्स सयटुणिण  
 पणअरुवीसा । धणहरुवीससयंगुल-तेरससद्धा  
 समहिआ य ॥ १८५ ॥ सगसय एऊआकोमी,  
 लस्का ठप्पण चउणवइसहसा । सद्धसयं पण-  
 टुकोस, सद्धवासट्टिकर गणिअं ॥ १८६ ॥ वट्टप-  
 रिहिं च गणिअं, अंतिमखंमाइ उसु जिअं च  
 धणं । बाहुं पयरं च घणं, गणेह एएहिं करणेहिं  
 ॥१८७॥ विस्कंजवग्गहगुण-मूलं वट्टस्स परिरओ  
 होइ । विस्कंजपायगुणिओ, परिरओ तस्स गणिअ-

पयं ॥१८८॥ अगोहाडु उसू सुच्चिअ, गुणवीसगुणो  
 कलाउसू होइ । विउसुपिहुत्ते चउगुण-उसुगु-  
 णिए मूलमिह जीवा ॥ १८९ ॥ इसुवग्गि ठगुणि  
 जीवा-वग्गजुए मूल होइ धणुपिट्ठं । धणुदुगवि-  
 सेससेसं, दक्षिअं बाहाडुगं होइ ॥ १९० ॥ अंति-  
 मखंरुस्सुसुणा, जीवं संगुणिअ चउहिं जईऊणं ।  
 लळंमि वग्गिए दस-गुणम्मि मूलं हवइ पयरो  
 ॥ १९१ ॥ जीवावग्गाण दुगे, मिलिए दक्षिए अ  
 होइ जं मूलं । वेअट्ठाईण तयं, सपिहुत्तगुणं जवे  
 पयरो ॥ १९२ ॥ एयं च पयरगणिअं, संववहारेण  
 दंसिअं तेण । किंचूणं होइ फलं, अहिअं पि हवे  
 सुहमगणणा ॥ १९३ ॥ पयरो सोस्सेहगुणो, होइ  
 घणो परियाइ सव्वं वा । करणगणणालसेहिं,  
 जंतगलिहिआउ दट्ठवं ॥ १९४ ॥

अथ लवणसमुद्र अधिकार द्वितीयः

गोतिहं लवणोन्नय, जोअण पणनवइसहस जा  
 तह । समञ्जूतत्ताओ सगसय- जलवुकूी सहस-  
 मोगाहो ॥ १९५ ॥ तेरासिएण मज्जिद्ध-रासिणा

सगुणिज्ज्ञा अंतिमगं । तं पढमरासिज्ज्ञा, उवेहं  
 मुणसु लवणजले ॥१९६॥ हिट्टुवरि सहसदसगं,  
 पिट्टुला मूलाज सतरसहस्सुच्चा । लवणिसिहा  
 सा तट्टुवरि, गाजट्टुगं वरूड् पुवेलं ॥१९७॥ बहु-  
 मज्जे चउदिसि चउ, पायाला वयरकलससंठाणा ।  
 जोअणसहस्स जम्हा, तदसगुण हिट्टुवरि रुंदा  
 ॥१९८॥ लस्कं च मज्जि पिट्टुला, जोअणलस्कं  
 च जूमिमोगाढा । पुवाइसु वरुवामुह-केजुवजूवे-  
 सरजिहाणा ॥ १९९ ॥ अण्णे लहुपायाला, सग  
 सहसा अरु सया सचुलसीआ । पुवुत्तसयंसपमा-  
 णा, तन्न तन्न प्पएसेसु ॥२००॥ कालो अ महा-  
 कालो, वेलंबपन्नंजणे अ चउसु सुरा । पलिअो-  
 वमाउणो तह, सेसेसु सुरा तयद्धाज ॥ २०१ ॥  
 सवेसिमहोत्तागे, वाज्ज मज्जिद्धयम्मि जलवाज्ज ।  
 केवलजलमुवरिद्धे, ज्ञागट्टुगे तन्न सासुव ॥ २०२ ॥  
 बहवे उदारवाया, मुहंति खुहंति ट्टुणिण वाराओ ।  
 एगअहोरत्तंतो, तया तया वेलपरिवुट्ठी ॥ २०३ ॥  
 बायालसट्टिट्टुसयरि-सहसा नागाण मज्जुवरि-

बार्हिं । वेक्षं धरंति कमसो, चउहत्तरुखवखु ते  
 सवे ॥ १०४ ॥ बायालसहस्सेहिं, पुबेसाणाइदि-  
 सिविदिसि लवणे । वेलंधराणुवेक्षं-धरराईणं गि-  
 रिसु वासा ॥१०५॥ गोथूजे दगजासे, संखे दग-  
 सीम नामि दिसि सेले । गोथूजो सिवदेवो,  
 संखो अ मणोसिलो राया ॥ १०६ ॥ कक्कोमे वि-  
 ज्जुपजे, केजास रुणप्पहे विदिसि सेले । कक्कोरुगु  
 कदमओ, केलास रुणप्पहो सामी ॥ १०७ ॥ एए  
 गिरिणो सवे, बावीसहीआ य दससया मूले ।  
 चउसय चउवीसहिआ, विह्णिण्णा हुंति सिहर-  
 तले ॥ १०८ ॥ सतरस सय इगवीसा, उच्चत्ते ते  
 सवेइआ सवे । कणगंकरययफालिह, दिसासु वि-  
 दिसासु रयणमया ॥ १०९ ॥ एव गुणहत्तरि  
 जोअण, बहि जलुवरि चत पणणवइजा-  
 या । एए मज्जे एव सय, तेसट्ठा जाग सगसयरि  
 ॥ ११० ॥ हिमवंतंता विदिसी-साणाइगयासु  
 चउसु दाढासु । सग सग अंतरदीवा, पढमच-  
 उक्कं च जगईओ ॥१११॥ जोअणतिसएहिं तओ,

सयसयवुहू अ ठसु चउक्केसु । अएणुएणजगइ-  
 अंतरि, अंतरसमविठ्ठरा सवे ॥ २१२ ॥ पढमच-  
 उकुच्च बहिं, अमूइअजोअणे अ वीसंसा । सय-  
 रिसवुहू परओ, मज्जदिसिं सवि कोसटुगं  
 ॥ २१३ ॥ सवे सवेइअंता, पढमचक्कम्मि तेसि  
 नामाइं । एगोरुअ आजासिअ, वेसाणिअ चेव  
 लंगूले ॥ २१४ ॥ बीअचउक्के हयगय-गोसक्कु-  
 लिपुवक्कएणणामाणो । आयंसमिंढगअओ-गोपु-  
 वमुहा य तइअम्मि ॥ २१५ ॥ हयगयहरिक्क-  
 मुहा, चउठ्ठए असक्कएणु हरिकएणो । अक्कएण  
 कएणपावरणु, दीओ पंचमचउक्कम्मि ॥ २१६ ॥  
 उक्कमुहो मेहमुहो, विज्जुमुहो विज्जुदंत ठट्ठ-  
 म्मि । सत्तमगे दंतंता, घणलट्ठनिगूढसुद्धा य  
 ॥ २१७ ॥ एमेव य सिहरिम्मि वि, अरुवीसं  
 सवि हुंति ठप्पएणा । एएसु जुअलरूवा, पलि-  
 आसंखंसआउ णरा ॥ २१८ ॥ जोअणदसमंसतणू,  
 पिट्टिकरंमाणमेसि चउसट्ठो । असणं च चउठ्ठा-  
 ओ, गुणसीदिण वच्चपालणया ॥ २१९ ॥ पठिम-

दिसि सुन्धियअलवण-सामिणो गोअमु ।त्त श्यु  
 दीवो । उन्नओ वि जंबुलावण, दुदु रविदीवा य  
 तेसिं च ॥२१०॥ जगइपरुप्परअंतरि, तह विन्नर  
 बारजोअणसहसा । एमेव य पुवदिसि, चंदचउ-  
 क्कस्स चउ दीवा ॥ २११ ॥ एवं चिअ बाहिरओ,  
 दीवा अट्ठट्ठ पुवपन्निमओ । दुदु लवण ठ ठ  
 धायइ-संरु ससीणं रवीणं च ॥ २१२ ॥ एए  
 दीवा जलुवरि, बहिं जोअण सहअट्ठसीइ तहा ।  
 ज्ञागा वि अ चालीसा, मज्जे पुण कोसटुगमेव  
 ॥२१३॥ कुलगिरिपासायसमा, पासाया एसु णि-  
 अणिअपहूणं । तह लावणजोइसिआ, दगफा-  
 लीह उरूलेसागा ॥ २१४ ॥

अथ तृतीय धातकीखंरुद्धीप अधिकार.

जामुत्तरदीहेणं, दससयसमपिहुल पणसयु-  
 ज्ञेणं । उसुयारगिरिजुगेणं, धायइसंरु दुहविहत्तो  
 ॥ २१५ ॥ खंरुटुगे ठ ठ गिरिणो, सग सग वासा  
 अरविवररूवा । धुरि अंति समा गिरिणो, वासा  
 पुण पिहुलपिहुलयरा ॥ २१६ ॥ दहकुंरुमुत्तममे-

रुमुस्सयं वित्थरं विअट्ठाणं । वट्टगिरीणं चसुमे-  
 रुवज्जमिह जाण पुव्वसमं ॥ ११७ ॥ मेरुदुगं पि  
 तह च्चिअ, एवरं सोमणसहिठुवरिदेसे । सगअरु-  
 सहसजणु त्ति, सहसपणसीइ उच्चत्ते ॥ ११८ ॥  
 तह पणणवई चउणउअ, अरुचउणउअ अट्ठ-  
 तीसा य । दस सयाइ कमेणं, पणट्ठाण पिहुत्ति  
 हिट्ठाओ ॥ ११९ ॥ एइकुंरुदीववणमुह-दहदी-  
 हरसलकमलविठारं । एइउंरुत्तं च तहा, दहदी-  
 हत्तं च इह दुगुणं ॥ १२० ॥ इगलक्खु सत्तस-  
 हसा, अरुसिय गुणसीइ जइसालवणं । पुवावर-  
 दीहंतं, जामुत्तर अट्ठसीजइअं ॥ १२१ ॥ बहि  
 गयदंता दीहा, पणलक्खूणसयरिसहस दुगुणट्ठा ।  
 इअरे तिलक्कठप्पणण-सहस्स सय दुणिण सग-  
 वीसा ॥ १२२ ॥ खित्ताणुमाणओ सेस-सेलणइ-  
 विजयवणमुहायामो । चउलक्कदीह वासा, वास-  
 विजयविठरो उ इमो ॥ १२३ ॥ खित्तंकगुणधुवंके,  
 दो सय बारुत्तरेहिं पविजत्ते । सव्वठ वासवासो,  
 हवेइ इह पुण इय धुवंका ॥ १२४ ॥ धुरि चउद

लख दुसहस, दोसगणउच्या धुवं तद्वा मज्जे ।  
 दुसय अमुत्तर सतस-द्विसहस षष्ठीस लखा य  
 ॥ २३५ ॥ गुणवीस सखं वत्तीस, सहस गुण्याल  
 लख धुवमंते । एङ्गिरिवणमाणविसु-रुखित्त  
 सोलंसपिहु विजया ॥ २३६ ॥ एव सहसा ठ सय  
 तिउ-त्तरा य ठच्चेव सोल जाया य । विजयपि-  
 हुत्तं एङ्गिरि-वणविजयसमासि चउलखा ॥ २३७ ॥  
 पुवं व पुरी अ तरू, परमुत्तरकुरुसु धाई महधाई ।  
 रुका तेसु सुदंसण-पियदंसणनामया देवा ॥ २३८ ॥  
 धुवरासीसु अ मिलिआ, एगो लखो अ अरु-  
 सयरी सहस्सा । अट्ट सया बायाला, परिहितिंगं  
 धायईसंके ॥ २३९ ॥

अथ कालोदधि अधिकार चतुर्थः

कालोओ सव्वठ वि, सहसुंको वेलविरहिओ  
 तठ । सुठ्ठिअसमकालमहा-कालसुरा पुवयत्तिम-  
 ओ ॥ २४० ॥ लवणम्मि व जहसंजव, ससिरवि-  
 दीवा इहं पि नायवा । एवरं समंतओ ते, कोस-  
 दुगुच्चा जलस्सुवरिं ॥ २४१ ॥

## अथ पुष्करद्वीपार्थ अधिकार पंचमः

पुष्करदलबहिजगद्, व संविद्यो माणुसुत्त-  
 रो सेलो । वेलंधरगिरिमाणो, सीहणिसार्ई णिस-  
 ढवणो ॥ १४१ ॥ जह खित्तणगार्ईणं, संठाणो  
 धाइए तहेव इहं । दुगुणो अ जइसालो, मेरुसु-  
 खारा तहा चेव ॥ १४२ ॥ इह बाहिरगयदंता, चउरो  
 दीहत्ति वीससयसहसा । तेआलीस सहस्सा, उ-  
 णवीसहिआ सया दुणिण ॥ १४४ ॥ अब्बिजतर गय-  
 दंता, सौलस लक्का य सहस ठवीसा । सोलहि-  
 अं सयमेगं, दीहत्ते हुंति चउरो वि ॥ १४५ ॥  
 सेसा पमाणओ जह, जंबूदीवाउ धाइए जणिआ ।  
 दुगुणा समा य ते तह, धाइअसंमाउ इह णेआ  
 ॥ १४६ ॥ अरुसी लक्का चउदस, सहसा तह  
 णव सया य इगवोसा । अब्बिजतर धुवरासो. पु-  
 व्वुत्तविहीइ गणिअवो ॥ १४७ ॥ इग कोमि तेर  
 लक्का, सहसा चउचत्त सग सय तियाला । पु-  
 स्करवरदीवट्टे, धुवरासी एस मज्जम्मि ॥ १४८ ॥  
 एगा कोमि अरुती-सलक्क चउहत्तरी सहस्सा

य । पंच सया पणसट्ठा, धुवरासो पुस्करऊंते ॥  
 ॥ २४९ ॥ गुणवीस सहस सग सय, चउणउअ  
 सवाय विजयविस्कंजो । तह इह बहिवहसल्लि-  
 ला, पविसंति अ णरणगस्साहो ॥ २५० ॥ पु-  
 स्करदलपुद्गावर-खंमंतो सहस दुग पिहु डुकुंमा ।  
 जणिया तट्ठाणं पुण, बहुस्सुया चेव जाणंति  
 ॥ २५१ ॥ इह पउममहापउमा, रुस्का उत्तरकु-  
 रूसु पुवं व । तेसु वि वसंति देवा, पउमो तह  
 पुंरुरीओ अ ॥ २५२ ॥ दोगुणहत्तरि पढमे, अरु  
 लवणे बीअदिवि तइअऊे । पिहु पिहु पण सय  
 चाला, इग णरखित्ते सयलगिरिणो ॥ २५३ ॥ ते-  
 रह सय सगवणणा, ते पणमेरूहिं विरहिआ स-  
 वे । उस्सेहपायकंदा, माणुससेलो वि एमेव ॥ २५४ ॥  
 धुवरासीसु तिलस्का, पणपणण सहस्स ठ सय  
 चुलसीआ । मिलिआ हवंति कमसो, परिहि-  
 तिगं पुस्करऊस्स ॥ २५५ ॥ णइदहघणथणिआ-  
 गणि-जिणाइणरजम्ममरणकालाई । पणयालल-  
 स्कजोअण-णरखित्तं मुत्तु णो पु(प)रओ ॥ २५६ ॥

चउसु वि उसुआरेसुं, इक्किं णरणगम्मि चत्ता-  
 र । कूमोवरि जिणजवणा, कुलगिरिजिणजवण-  
 परिमाणा ॥ २५७ ॥ तत्तो दुगुणपमाणा, चउदारा  
 शुत्तवणिणअसरूवे । णंदीसरि बावणणा, चउ कुं-  
 रुलि रुअगि चत्तारि ॥ २५८ ॥ बहूसंखविगप्पे  
 रुअ-गदीवि उच्चत्ति सहस धुलसीई । णरणग-  
 सम रुअगो पुण, विहरि सयठाणि सहसंको  
 ॥ २५९ ॥ तस्स सिहरम्मि चउदिसि, बीअसह-  
 सीगिगु चउत्ति अट्ठट्ठा । विदिसि चऊइअ चत्ता,  
 दिसिकुमरी कूरुसहसंका ॥ २६० ॥ इइ कइवय-  
 दीवोदहि-विआरलेसो मए विमइणावि । लि-  
 हिआो जिणगणहरगुरु-सुअसुअदेवीपसाएण ॥  
 ॥ २६१ ॥ सेसाण दीवाण तहोदहीणं, विआर-  
 विहारमणोरपारं । सया सुआआो परिजांवयंतु,  
 सबं पि सबन्नुमइक्कचित्तां ॥ २६२ ॥ सूरीहि जं  
 रयणसेहरनामएहिं, अप्पहमेव रइअं णरखित्त-  
 विस्कं । संसोहिअं पयरणं सुअणेहि लोए, पावेउ  
 तं कुसलरंगमइं पसिद्धं ॥ २६३ ॥

॥ इति श्रीलघुक्षेत्रसमासप्रकरणमूलगाथाः ॥

अथ बृहत्समग्रहणीसूत्राणि ॥ नमिसं अरि-  
 हंताई ठिइजवणो गाहणा य पत्तेयं ॥ सुरमार-  
 याण बुढं, नरतिरियाणं विणा जवणं ॥ १ ॥ उ-  
 ववायचवण विरहं, संखं इगसमइअं गमागमणे ॥  
 दसवाससहस्साइं, जवणवईणं, जहन्नठिई ॥ २ ॥  
 चमर बलि सार महिअं, तदेवीणं तु तिणिण च-  
 त्तारि ॥ पल्लियाइं सट्ठाइं, सेसाणं नवनिकायाणं  
 ॥ ३ ॥ दाहिण दिवट्ठपलिअं, उत्तरउं हुंति पुन्नि  
 देसूणा ॥ तदेवि मऊ पलिअं, देसूणं आउमुक्को-  
 सं ॥ ४ ॥ वंतरिआण जहन्नं, दसवाससहस्स प-  
 लिअमुक्कोसं ॥ देवीणं पलिअऊं, पलिअं अहियं  
 ससिरवीणं ॥ ५ ॥ लस्केण सहस्सेण य, वासाण ग-  
 हाण पलिअमेएसिं ॥ ठिइ अऊं देवीणं ॥ कमेण  
 नरकत्तत्ताराणं ॥ ६ ॥ पलिअऊं चउजागो, चउ अ-  
 रुजागाहिगाउ देवीणं ॥ चउजुअले चउजागो,  
 जहन्नमरुजाग पंचमए ॥ ७ ॥ दोसाहि सत्तसा-  
 हिय, दस चउदस सतर अयर जा सुक्को ॥ इ-  
 क्किं महिय मित्तो, जा इगतीसुवरि मेविज्जे ॥ ८ ॥

तिच्चीस सुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा ठिइ जिह्वा ॥  
 सोहम्मे ईसाणे, जइन्न ठिई पल्लिअ महिंयं च  
 ॥ ९ ॥ दोसाहि सत्त दस चउदस, सत्तर अयराइं  
 जा सहस्सारो ॥ तप्परउं इक्किं, अहिअं जा  
 एत्तर चउके ॥ १० ॥ इगतीससागराइं, सब्बे पुण  
 जहन्नठिइ नब्बि ॥ परिगहिआणिअ राणिय, सो-  
 हम्मीसाणदेवीणं ॥ ११ ॥ पल्लिअं अहिंयं च कमा,  
 ठिई जहन्ना इउअ उक्कोसा ॥ पल्लिआइंसत पण्णा,  
 स तहय नव पंचवन्ना य ॥ १२ ॥ पण ठ चउ  
 चउ अठ य, कमेण पत्तेअ मग्गमहिंसीउं ॥ अ-  
 सुर नागाइ वंतर, जोइस कप्पडुगिंदाणं ॥ १३ ॥  
 दुसुतेरस दुसुबारस, ठ प्पण चउ चउ दुगे दुगे  
 अचउ ॥ गेविज्जा एत्तरे दस, विसठि पयरा उवरि  
 लोए ॥ १४ ॥ सोहमुक्को सठिइ, निअपयरविहत्त  
 इब्बसंगुणिआ ॥ पयरुक्कोस ठिइउं, सब्बजहन्नउं-  
 पल्लियं ॥ १५ ॥ सुरकप्पठिइविसेसो, सगपयरवि-  
 हत्त इब्बसंगुणिउं ॥ हिठिह्वठिइसहिउं, इब्बिय-  
 पयरस्मि उक्कोसा ॥ १६ ॥ सोमजमाणं स तिज्जा,

ग पक्षिय वरुणस्सडुन्निदेसूणा ॥ वेसमणे दोप-  
 लिया, एसठिई लोगपालाणं ॥ १७ ॥ कप्पस्स  
 अंतपयरे, निय कप्पवम्मिसया विमाणउ ॥ इंद-  
 निवासातेसिं, चऊदिसिंलोगपालाणं ॥ १८ ॥ (सु-  
 रेसु ठिइदारं सम्मत्तं, एएसु चेव जवणदारं ज-  
 एणइ) असुरा नाग सुवन्ना, विज्जू अग्गीह दीव  
 उदहीअ ॥ दिसि पवण थणिय दसविह, जव-  
 णवई तेसु डुडु इंदा ॥ १९ ॥ चमरे बलीअ ध-  
 रणे, नूयाणं देअ वेणुदेवे य ॥ तत्तो अवेणु दाली,  
 हरिकंत हरिस्सहे चेव ॥ २० ॥ अग्गिसिह अ-  
 ग्गिमाणव, पुण्णविसिठे तहेव जलकंते ॥ जल-  
 पह तह अमिअगई, मिअवाहण दाहिणुत्तरउ  
 ॥ २१ ॥ वेळंबेअ पन्नंजण, घोस महाघोस एसि  
 मन्नयरो ॥ जंबु दीवं ठत्तं, मेरुं दंरुं पडुकाउं ॥ २२ ॥  
 चउतीसा चउचत्ता, अठत्तीसा य चत्तपंचणहं ॥  
 पन्ना चत्ता कमसो, लस्का जवणाण दाहिणउ  
 ॥ २३ ॥ चउचउलस्कविहूणा, तावइआ चेव  
 उत्तरदिसाए ॥ सवे वि सत्तकोमो, बावत्तरि हुंति

लस्का य ॥ २४ ॥ चत्तारियकोमीउं, लस्का ठ-  
 च्चेव दाहिणे जवणा ॥ तिण्णेव य कोमीउं, ल-  
 स्का ठावठि उत्तरउं ॥ २५ ॥ रयणाए हिट्ठुवरिं,  
 जोयणसहसं विमुत्तु ते जवणा ॥ जंबुद्दीवसमा  
 तह, संख मसंखिज्जा विठारा ॥ २६ ॥ चून्नाम-  
 णिफणि गरुमे, वज्जे तह कलस सीह अस्से अ ॥  
 गय मयर वळ्ळमाणे, असुराईणं मुणसु चिंधे ॥ २७ ॥  
 असुरा काला नागु द, हि पंशुरा तह सुवण्ण  
 दिसि थणिया ॥ कणगाज विज्जु सिहि दी, व  
 अरुण वाऊ पिअंगुनिजा ॥ २८ ॥ असुराणवठ-  
 रत्ता, नागो दहि विज्जु दीव सिहि नीला ॥  
 दिसि थणिअ सुवन्नाणं, धवला वाऊण संऊ-  
 रुई ॥ २९ ॥ चउसठि सठि असुरे, उच्च सह-  
 स्साईं धरणमाईणं ॥ सामाणिया इमेसिं, चउग्गु-  
 णा आयरस्काय ॥ ३० ॥ रयणाए पढमजोयण,  
 सहस्से हिट्ठुवरिं सय सय विट्ठुणे ॥ वंतरियाणं  
 रम्मा, जोमानगरा असंखिज्जा ॥ ३१ ॥ बाहिंवट्ठा  
 अंतो, चउरंस अहोअ कणियायारा ॥ जवणवईणं

सह वं, तराण इंदजवणाउ नायवा ॥ ३२॥ तहिं  
 देवा वंतरिया, वरतरुणीगीयवाइयरवेणं ॥ निच्चं  
 सुहिया पमुइया, गयंपि कालं न याणंति ॥ ३३॥  
 ते जंबूदीव जारह, विदेह सम गुरु जहन्न मज्झि-  
 ममा ॥ वंतर पुण अठविहा, पिसायजूया तहा  
 जस्का ॥ ३४ ॥ रक्कस किंनर किंपुरिसा, महो-  
 रगा अठमा य गंधवा ॥ दाहिणउत्तरजेआ,  
 सोलस तेसिं इमे इंदा ॥ ३५ ॥ काले अ महा-  
 काले, सुरूव पमिरूव पुणणजदेअ ॥ तह चेव  
 माणिजदे, जीमे अ तहा महाजीमे ॥ ३६ ॥  
 किंनर किंपुरिस सप्पुरिस, महापुरिस तहय अ-  
 इकाए ॥ महाकाए गीअरई, गीअजसे दुन्नि दुन्नि  
 कमा ॥ ३७ ॥ चिंधं कलंब सुलसे, वरु खट्ठंगे  
 असोग चंपयए ॥ नागे तुंबरुअज्जाए, खट्ठंगविव-  
 ज्जिया रुक्का ॥ ३८ ॥ जख पिसाय महोरग, गं-  
 धवा साम किंनरा नीला ॥ रक्कस किंपुरिसा वि  
 अ. धवला जुआ पुणो काला ॥ ३९ ॥ अणपन्नी  
 पणपन्नी, इसिवाइ अ जुअवाइए चेव ॥ कंदी अ

महाकंदी, कोहंमे चेव पयए अ ॥ ४० ॥ इयपढम  
 जोयणसए, रयणाए अट्ट वंतरा अवरे ॥ तेसु इह  
 सोलसिंदा, सअग अहो दाहिणुत्तरउ ॥ ४१ ॥  
 संनिहिए सामाणे, ऊइ विहाए इसिय इसि-  
 वाले ॥ ईसर महेसरे विय, हवइ सुवढे विसाळे  
 य ॥ ४२ ॥ हासे हास रईविय, सेएय जवे तहा  
 महासेए ॥ पयगे पयगवईविय, सोलसइंदाण ना-  
 माइ ॥ ४३ ॥ सामाणियाण चउरो, सहस्स सो-  
 लसय आयरस्काणं ॥ पत्तेयं सवेसिं, वंतरवइ स-  
 सरवीणं च ॥ ४४ ॥ इंद सम तायतीसा, परिस-  
 तिया रक्कलोगपाला य ॥ अणिय पइण्णा अ-  
 ज्जिउगा, किब्बिसं दस जवण वेमाणी ॥ ४५ ॥  
 गंधव नट्ट हय गय, रह जरु अणियाणि सब इं-  
 दाणं ॥ वेमाणियाण वसहा, महिसा य अहो-  
 निवासीणं ॥ ४६ ॥ तिच्चीस तायतीसा, परिस-  
 तिआ लोगपाल चत्तारि ॥ अणिआणि सत्त स-  
 त्तय, अणियाहिव सबइंदाणं ॥ ४७ ॥ नवरं वंतर  
 जोइस, इंदाण न हुंति लोगपालाउ ॥ तायत्तिंस

जिहाणा, तियसावियतेसिं नहु हुंति ॥ ४७ ॥  
 समजूतलाउ अछहिं, दसूण जोयण सएहिं आ-  
 रप्प ॥ उवरि दसुत्तर जोयण, सयम्मि चिठंति  
 जोइसिया ॥ ४८ ॥ तढरवी दस जोयण, असीइ  
 तडुवरि ससी य रिक्केसु ॥ अह जरणि साइ उ-  
 वरिं, बहिमूलो प्पिंनतरे अजिई ॥ ४९ ॥ तार  
 रवि चंद रिक्का, बुह सुक्का जीव मंगल सणिया ।  
 सगसय नउय दस असिइ, चउ चउ कमसो  
 तिया चउसु ॥ ५० ॥ इक्कारस जोयाणसय इग  
 वीसि क्कारसाहिया कमसो ॥ मेरुअलोगाबाहिं,  
 जोइसचक्कं चरइ ठाइ ॥ ५१ ॥ अडकविट्ठागारा,  
 फलिहमया रम्म जोइस विमाणा ॥ वंतरनयरे  
 हिं तो, संखिज्जागुणा इमे हुंति ॥ ५२ ॥ ताइं  
 विमाणाइं पुण, सवाइं हुंति फालिहमयाइं ॥ द-  
 गफालीहमया पुण, लवणे जे जोइस विमाणा  
 ॥ ५३ ॥ जोयणिगसट्ठि जागा, ठप्पन्नरुयाल गा-  
 उडु इगळं ॥ चंदाइविमाणाया, म विठ्ठरा अरु  
 मुच्चत्तं ॥ ५४ ॥ पणयाल लक्क जोयण, नरखित्तं

तन्निमे सया जमिरा ॥ नरखित्ताञ् बहिं पुण, अ-  
 रूपमाणा ठिआ निच्चं ॥ ५६ ॥ ससिरविगहन-  
 रक्ता, ताराञ् हुंति जहुत्तरं सिग्धा ॥ विवरीयाञ्  
 महट्टोअ, विमाणवहगा कमेणेसिं ॥ ५७ ॥ सोलस  
 सोलसअरु चउ, दो सुरसहसा पुरोय दाहिणञ् ॥  
 पन्निम उत्तर सीहा, हब्बी वसहा हया कमसो  
 ॥ ५८ ॥ गहअट्टासी नरकत, अरुवीसं तार कोमि  
 कोमीणं ॥ ठासट्टिसहस्स नवसय, पणसत्तरि एग-  
 ससि सिन्नं ॥ ५९ ॥ कोमा कोमी सन्नं, तरंतु  
 मन्नंति खित्त थोवतया ॥ केई अन्ने उस्से, हंगु-  
 लमाणेण ताराणं ॥ ६० ॥ किएहं राहु विमाणं,  
 निच्चं चंदेण होइ अविरहियं ॥ चउरंगुल मप्पत्तं,  
 हिट्ठा चंदस्स तं चरइ ॥ ६१ ॥ तारस्स य तारस्स  
 य जंबुदीवग्मि अंतरं गुरुयं ॥ बारस जोयण स-  
 हसा, पुन्निसया चेव बायाला ॥ ६२ ॥ निसढो  
 य नीलवंतो, चत्तारिसयउच्च पंचसय कूमा ॥  
 अऊंउवरिं रिक्का, चरंति उज्जयट्ट बाहाए ॥ ६३ ॥  
 ठावट्टा पुन्निसया, जहन्नमेयं तु होइ वाघाए ॥

निष्वाद्याए गुरु स्रु, दोणाउय धणुसया पंच ॥६४॥  
 माणुसनगाउ बाहिं, चंदासूरस्स सूरचंदस्स ॥  
 जोयणसहस्स पन्ना, स एणगा अंतरं दिट्ठं ॥६५॥  
 ससिससि रविरवि साहिय, जोयण सस्केण अं-  
 तरं होइ ॥ रविअंतरिया ससिणो, ससि अंत-  
 रिया रवी दित्ता ॥ ६६ ॥ बहियाउ माणुसुत्तर,  
 चंदा सूरा अवट्ठिउज्जोया ॥ चंदा अचीयजुत्ता,  
 सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ६७ ॥ उद्धार सागर-  
 दुगे, सट्ठे समएहिं तुल्ल दीबुदही ॥ दुगुणा दुगुण  
 पविठ्ठर, वलया गारा पढमवज्जं ॥ ६८ ॥ पढमो  
 जोयण लस्कं, वट्ठो तं बेढिउं ठिया सेसा ॥ पढ-  
 मो जंबुदीवो, सयंचुरमणोदही चरमो ॥ ६९ ॥  
 जंबु धायइ पुक्खर, वारुणिवर खोरघय खोय नं-  
 दिसरा ॥ अरुण रुणवाय कुंरुल, संस्व रुयग जु-  
 यग कुसकुंचा ॥ ७० ॥ पढमे लवणोजलहि, बीए  
 कालो य पुक्कराईसु ॥ दोवेसु हुंति जलही, दी-  
 वस माणेहिं नामेहिं ॥ ७१ ॥ आत्तरण वल्ल गंधे,  
 उप्पल तिलएय पउम निहि रयणे ॥ वासहर दह

नईउ, विजया वक्खार कप्पिदा ॥७१॥ कुरु मंदर  
 आवासा, कूमा नक्खत्त चंद सूरा य ॥ अन्ने वि  
 एवमाइ, पसह बहूण जे नामा ॥७३॥ तं नामा  
 दीवु दही, तिपमोयायार हुंति अरुणाई ॥ जंबू ल-  
 वणाईया, पत्तेयं ते असंखिज्जा ॥ ७४ ॥ ताणं  
 तिम सूरवरा, वज्जास जलही परं तु इक्किा ॥  
 देवे नागे जक्खे, जूए य सयंजुरमणे य ॥ ७५ ॥  
 वारुणिवर खीरवरो, घयवर लवणो य हुंति जि-  
 न्नरसा ॥ कालो य पुक्करोदहि, सयंजुरमणो य  
 उदगरसा ॥ ७६ ॥ इक्कुरस सेसजलही, लवणे  
 काधो य चरिम बहुमढा ॥ पण सग दस जोयण  
 सय, तणु कमा थोवसेसेसु ॥ ७७ ॥ दो ससि दो  
 रवि पढमे, दुगुणा लवणम्मि घायईसंमे ॥ बार-  
 ससि बारस रवि, तप्पजिइ निदिट्ठ ससिरविणो  
 ॥ ७८ ॥ तिगुणा पु विद्ध जुया, अणंतराणंतरं-  
 मि खित्तंम्मि ॥ कालोए बायाळा, विसत्तरी पु-  
 क्खरद्धंमि ॥ ७९ ॥ दो ससि दो रवि पंती, ए  
 गंतरिया ठसट्ठि संखाया ॥ मेरुं पयाहिणंता, मा-

एणसखिते परियमंति ॥ ८० ॥ ठप्पणं पंतीउं,  
 नक्खत्ताणं तु मणुयलोगंमि ॥ ठावट्ठी ठावठीए,  
 होई इक्किक्किया पंती ॥ ८१ ॥ एवं गहाइणो विहु,  
 नवरं धुव पासवत्तिणो तारा ॥ तंचिय पयाहिणं-  
 ता, तन्नेव सया परिजमंति ॥ ८२ ॥ चउयाल सयं  
 पढमि, ह्वयाए पंतीए चंदसुराणं ॥ तेणपरं पती-  
 उं, चउरुत्तरियाइ बुढीणं ॥ ८३ ॥ बावत्तरि चं-  
 दाणं, बावत्तरि सूरियाण पंतीए ॥ पढमाए अंतरं  
 पुण, चंदचंदस्स लक्ख दुगं ॥ ८४ ॥ जो जावइ  
 लक्खाइं, विठ्ठरउं सागरो य दीवो वा ॥ तावइ-  
 आउंय तहिं, चंदासूराण पंतीउं ॥ ८५ ॥ पनरस  
 चुलसीइ सयं, इह ससि रवि मंरुलाइं तक्खित्तं ॥  
 जोयण पणसय दसहिय, जागा अरुयाल इग-  
 सट्ठा ॥ ८६ ॥ तिसिगसट्ठा चउरो, इगइगसट्ठस्स  
 सत्तज्जइयस्स ॥ पणतीसं च दु जोयण, ससिर-  
 विणो मंरुलं तरयं ॥ ८७ ॥ पणसट्ठी निसढंमिय,  
 तत्तिय बाहा दु जोयणं तरिया ॥ एगुणवोसं च  
 सयं, सूरस्स य मंरुला लवणे ॥ ८८ ॥ मंरुलद-

सगं लवणे, पण्णं निसदम्मि होइ चंदस्स ॥ मं-  
 रुद्ध अंतस्माणं, जाण पमाणं पुरा कहियं ॥ ८९ ॥  
 ससिरविणो लवणंमि य, जोयण सय तिणिणतोस  
 अहियाइं ॥ असिई तु जोयणसयं, जंबुद्दीवम्मि प-  
 विसंति ॥ ९० ॥ गह रिक्ख तार संखं, जठेठसि  
 नाउ मुदहिदीवे वा ॥ तस्ससिहि एग ससिणो,  
 गुणसंखं होइ सव्वगं ॥ ९१ ॥ बत्तीसट्ठावीसा, बारस  
 अरु चउ विमाण लक्खाइं ॥ पन्नास चत्त ठ सहस,  
 कमेण सोहम्म माईसु ॥ ९२ ॥ दुसु सयचउ दुसु  
 सयतिग, मिगारसहियं सयं तिगेहिट्ठा ॥ मज्जे  
 सत्तुत्तरसय, मुवरि तिगे सयमुवरि पंच ॥ ९३ ॥  
 चुलसीइ लक्ख सत्ता, एवइ सहस्सा विमाण ते-  
 वीसं ॥ सव्वग मुळ्लोगं, मिइंदया बिसट्ठि पय-  
 रेसु ॥ ९४ ॥ चउदिसि चउपंतीउ, बासट्ठिविमा-  
 णिया पढमपयरे ॥ उवरि इक्किक्कीहीणा, अणुत्तरे  
 जाव इक्किक्कं ॥ ९५ ॥ इंदयवट्ठा पंतिसु, तोक-  
 मसो तंस चउरंसा वट्ठा ॥ विविहा पुप्फवकिष्सा,  
 तयंतरे मुत्तुं पुव्वदिसिं ॥ ९६ ॥ वट्ठं वट्ठेसुवरिं,

तंसं तंसेसु उवरिमं होइ ॥ चउरंसे चउरंसं,  
 उडुंतु विमाण सेढीए ॥ ९७ ॥ सबे वट्टविमाणा,  
 एगडुवारा हवंति नायवा ॥ तिस्सिय तंसविमाणे,  
 चत्तारि य हुंति चउरंसे ॥ ९८ ॥ आवल्लिय  
 विमाणाणं, अंतरं नियमसो असंखिज्जं ॥ संखि-  
 ज्जमसंखिज्जं, जणियं पुप्फावकिष्साणं ॥ ९९ ॥  
 एगं देवे दीवे, डुवे य नागोदहीसु बोधेवे ॥  
 चत्तारि जक्कदीवे, जूय समुद्देसु अछेव ॥ १०० ॥  
 सोल्लस सयंजुरमणे, दीवेसु पइठिया य सुरज्ज-  
 वणा ॥ इगतीसं च विमाणा, सयंजुरमणे समुद्दे  
 य ॥ १०१ ॥ अच्चंत सुरहिगंधा, फासे नवणीय  
 मज्ज सुह फासा ॥ निच्चुज्जोया रम्मा, सयंपहा  
 ते विरायंति ॥ १०२ ॥ जे दक्खिणेण इंदा, दाहि-  
 णउ आवली मुणेयवा ॥ जे पुण उत्तर इंदा,  
 उत्तरउ आवली मुणे तेसिं ॥ १०३ ॥ पुवेण  
 पडिमेण य, जे वट्ठा तेवि दाहिणिद्वस्स ॥ तंस  
 चउरंसगा पुण, सामस्सा हुंति डुण्हंपि ॥ १०४ ॥  
 पुवेण पडिमेण य, सामस्सा आवली मुणेयवा ॥

जेषुण वट्ट विमाणा, मज्झिम्मा दाहिणद्वाणं ॥१०५॥  
 पागारपरिस्किन्ता, वट्टविमाणा हवन्ति सब्बेवि ॥  
 चउरंस विमाणाणं, चउहिंसि वेइया होइ ॥१०६॥  
 जत्तो वट्टविमाणा, तत्तो तंसस्स वेइया होइ ॥  
 पागारो बोधवो, अवसेसेमुत्तु पासेसु ॥ १०७ ॥  
 पढमं तिम पयरा वलि, विमाण मुहञ्जुमि तस्स  
 मासद्धं ॥ पयरगुण मिठकप्पे, सब्बग्गं पुप्फक्किण्यरे  
 ॥ १०८ ॥ इगदिसि पंति विमाणा, तिविज्जत्ता  
 तंस चउरंसा वट्टा ॥ तंसेसु सेसमेगं, खिव सेस  
 दुगस्स इक्किक्कं ॥१०९॥ तंसेसु चउरंसेसु य, तो  
 रासितिगंपि चउगुणं काउं ॥ वट्टेसु इंदयं खिव,  
 पयरभणं मीलियं कप्पे ॥ ११० ॥ कप्पेसुय मिय  
 महिसो, वराह सीहाय ठगल सालूरा ॥ हय गय  
 जुयंग खग्गी, वसहा विरिमाइं चिंधाइं ॥१११॥  
 चुलसी असिइ बावत्तरि, सत्तरि सट्ठो य पन्न  
 चत्ताला ॥ तुल्लसुर तीस वेसा, दस सहस्स आध  
 रक्क चउगुणिया ॥ ११२ ॥ दुसु तिसु तिसु कप्पेसु  
 घणुदहि घणवाय तफुज्जयं च कमा ॥ सुरज्जवण

पइछाणं, आगास पइठिया उवरिं ॥ ११३ ॥ सता-  
 वीस सयाइं, पुढवीपिंको विमाण उच्चत्तं ॥ पंचसया  
 कप्पडुगे, पढमे तत्तोय इक्किं ॥ ११४ ॥ हायइ  
 पुढवीसु सयं, वड्डइ जवणेषु डु डु डु कप्पेसु ॥  
 चउगे नवगे पणगे, तहेव जाणुत्तरेसु जवे ॥ ११५ ॥  
 इगवीस सया पुढवी, विमाण मिक्कारसेवय सयाइ  
 ॥ वत्तीस जोयणसया, मिन्निया सब्ब नायवा  
 ॥ ११६ ॥ पण चउ ति डु वल्ल विमा, ण सधय  
 डुसु डुसुय जा सहस्सारो ॥ उवारि सिय जवण  
 वंतर, जोइसियाणं विविहवस्सा ॥ ११७ ॥ रविणो  
 उदयवंतर, चउणवइसहस पणसय ठवीसा ॥  
 बायाल सठिजागा, कक्करु संकंति दियहंमि ॥ ११८ ॥  
 एयंमि पुणो गुणिए, तिपंच सग नवहि होइ  
 कममाणं ॥ तिगुणंमि य दोलरुका तेसीइ सहस्स  
 पंचसया ॥ ११९ ॥ असिई ठसठिजागा, जोयण  
 चउलरुक बिसतरि सहस्सा ॥ ठच्चसया तेत्तीसा,  
 तीसकला पंचगुणियम्मि ॥ १२० ॥ सत्तगुणे ठल-  
 रुका, इगसठिसहस्स ठसय ठासीया ॥ चउपन्न-

कला तह नव, गुणंमि अरुलख सट्टाउं ॥१२१॥  
 सत्तसया चत्ताला, अठारसकला य इयकम्मा  
 चउरो ॥ चंरा चवला जयणा, वेगाय तहा गइ  
 चउरो ॥ १२२ ॥ इत्थयगइं चउठिं, जयणयरिं नाम  
 केइ मन्नंति ॥ एहिं कमोहिं मिमाहिं, गइहिं चउरो  
 सुरा कमसो ॥ १२३ ॥ विस्कंजं आयामं, परिहिं  
 अग्निं तरिं च बाहिरयं ॥ जुगवं मिणंति ठम्मा,  
 साजाव न तहावि ते पारं ॥ १२४ ॥ पावंति  
 विमाणाणं, केसिंपिहु अहव तिगुणियाईए ॥  
 कमचउगे पत्तेयं, चंराईगइंउं जोइज्जा ॥ १२५ ॥  
 जोयण लख पमाणं, निमिस मित्तेण जाइ जो  
 देवा ॥ ठम्मासे णय गमाणं, एगं रज्जू जिणा बिंति  
 ॥ १२६ ॥ तिगुणेण कप्पचउगे, पंचगुणेणं तु  
 अठसु मुणिज्जा ॥ गेविज्जे सत्तगुणेणं, नवगुणे  
 एत्तरचउके ॥ १२७ ॥ पढमपयरम्मि पढमे, कप्पे  
 उरुत्तामइंदयविमाणं ॥ पणयाल लखजोयण,  
 लखं सव्ववरि सव्वठं ॥ १२८ ॥ उरु चंद रयण-  
 वग्गु, वीरिय वरुणे तहेव आणंदे ॥ बंजे कंचण

रुद्रजे, चंद अरुणे य वरुणे य ॥ १२९ ॥ वेरुलिय  
 रुयग रुद्रे, अंके फलिहे तहेव तवणिज्जे ॥ मेहे  
 अग्ध हलिहे, नलिणे तहलोहियस्केय ॥ १३० ॥  
 वद्रे अंजण वरमा, ल रिठ देवेय सोम मंगलए ॥  
 बल जहे चक्र गया, सोवन्निय णंदियावत्ते ॥ १३१ ॥  
 आंजकरेय गिळी, केउ गरुले य होइ बोधवे ॥  
 बंजे बंजहिण पुण, वंजुत्तर लंतए चेव ॥ १३२ ॥  
 महसुक्क सहस्सारे, आणय तह पाणएय बोधवे ॥  
 पुप्फे लंकार आरण, तहा विय अच्चुए चेव ॥ १३३ ॥  
 सुदंसण सुपक्खिजे ॥ मणोरमे चेव होइ पढम-  
 तिगे ॥ तत्तोय सव्वजहे, विसालए सुमणे चेव  
 ॥ १३४ ॥ सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ  
 तइय तिगे ॥ सवठ सिद्धि नामे, इंदया एए  
 बासछी ॥ १३५ ॥ पणयालीसं लस्का, सीमंतय  
 माणुसं उरु सिवंच ॥ अपयछाणो सव्व, ठ जंबु-  
 द्वीवो इमं लस्कं ॥ १३६ ॥ अह जागा सग पुढवी,  
 सु रज्जु इक्किक्क तह य सोहम्मे ॥ माहिंद लंत  
 सहसा, र अच्चुय गेविज्जा लोगंते ॥ १३७ ॥ सुरेसु

जवण दारं सम्मत्तं ॥ इण्हि उंगाहणा दारं जसइ  
 ॥ जवण वण जोइ सोह, म्मीसाणे सत्तहव तणु-  
 माणं ॥ दु दु दु चउक्केगे वि, ज्ञाणुत्तरे हाणि  
 इक्किं ॥ १३८ ॥ कप्पडुग दु दु दु चउगे, नवगे  
 पणगे य जिठठिइ अयरा ॥ दोसत्त चउदठारस,  
 बावीसिगतीस तित्तीसा ॥ १३९ ॥ विवरे ताणि  
 कूणे, इक्कारसगाउ पारिए सेसा ॥ हठ्ठिकारस-  
 चागा, अयरे अयरे समहियम्मि ॥ १४० ॥  
 चयपुवसरीराउ, कमेणएगुत्तराइ वुट्ठीए ॥ एवंठिई-  
 विसेसा, सणंकुमाराइ तणुमाणं ॥ १४१ ॥ जव-  
 धारणिज्जा एसा, उत्तरविउवि जोयणालस्कं ॥  
 गेविज्जा णुत्तरेसु, उत्तरवेउविआ नठ्ठि ॥ १४२ ॥  
 साहाविय वेउविय, तणू जहसा कमेण पारंजे ॥  
 अंगुल असंख चागो, अंगुल संखिज्जा चागो य  
 ॥ १४३ ॥ सुरेसु उंगाहणा दारं सम्मत्तं, इण्हि  
 विरहकालोववाय उवट्टणाणं दारं जसइ ॥ साम-  
 न्नेणं चउविह, सुरेसु बारस मुहुत्त उक्कोसा ॥  
 उववायविरहकालो, अह जवणाईसु पत्तेयं ॥ १४४ ॥

भवण वण जोइ सोह, म्मी साणेसू मुहुत्त चउवीसं  
 ॥ तो नवदिण वीसमुहू, बारसदिण दस मुहुत्ता  
 य ॥ १४५ ॥ बावीस सडूदीहा, पणयाल असीइ  
 दिणसयंतत्तो ॥ संखिज्जा दुस मासा, दुसु वासा  
 तिसु तिगेसु कमा ॥ १४६ ॥ वासाणसया सहसा,  
 लस्का तह चउसु विजयमाईसु ॥ पलियाअसंख-  
 जागो, सव्वठे संखजागो य ॥ १४७ ॥ सव्वेसिंपि  
 जहन्नो, समउं एमेव चवणविरहोवि ॥ इग दु ति  
 संख मसंखा, इग समए हुंति अ चवंति ॥ १४८ ॥  
 नरपंचिंदिय तिरिया, णुप्पत्तीसुरजवे पजुत्ताणं ॥  
 अज्जावसाय विसेसा, तेसिं गइ तारतम्मंतु ॥ १४९ ॥  
 नर तिरिअसंखजीवी, सव्वे नियमेण जंति देवेसु  
 ॥ निय आउअसम हीणा, उएसु ईसाण अंतेसु  
 ॥ १५० ॥ जंति समुच्चिम तिरिया, नवण वणेसु  
 नजोइमाईसु ॥ जं तेसिं उववाउं, पलिया संखंस  
 आजसु ॥ १५१ ॥ बालतवे पक्खिज्जा, उक्करु रोसा  
 तवेण गारविया ॥ वेरेणय पक्खिज्जा, मरिउं  
 असुरेसु जायंति ॥ १५२ ॥ रज्जुगाह विस जरक्कण,

जल जलण पवेस तल्लह बुह डुहउ ॥ गिरिसिर  
 परुणाउ मुया, सुहजावा, हुंति वंतरिया ॥ १५३ ॥  
 तावस जा जोइसिया, चरग परिवाय बंजलोगो  
 जा ॥ जासहस्सारो पंचि, दितिरिअ जा अच्चुउं  
 सट्ठा ॥ १५४ ॥ जइ लिंगमिठदिठि, गेविज्जा जाव  
 जंति उक्कोसं ॥ पयमवि असहहंतो, सुत्तहं मिठ-  
 दिठीउं ॥ १५५ ॥ सुत्तं गणहररइअं, तहेव  
 पत्तेयबुद्ध रइअं च ॥ सुयकेवल्लिणा रइअं, अज्जिण  
 दस पुविणा रइअं ॥ १५६ ॥ ठउमठ संजयाणं,  
 उववा उक्कोसउं अ सबठे ॥ तेसिं सट्ठाणंपिअ,  
 जहणउं होइ सोहम्मे ॥ १५७ ॥ लंतंमि चउद-  
 पुविस्स, तावसाईण वंतरेसु तहा ॥ एसिं उववाय  
 विहि, नियकिरियठियाण सबोवि ॥ १५८ ॥  
 वज्जारिसहनारायं, पढमं बीअं च रिसहनाराय  
 ॥ नारायमरुनाराय, कीलिया तह यठेवठं ॥ १५९ ॥  
 एए ठ स्संघयणा, रिसहोषट्ठोय कीलिया वज्जां ॥  
 उज्जउंमक्कमबंधो, नाराउं होइ विन्नेउं ॥ १६० ॥  
 ठ गप्पतिरीनराणं, संमुत्तिम पणिंदि विगल्लठेवठं

॥ सुरनेरश्या एगिं, दियाय सवे असंघयणा ॥  
 ॥ १६१ ॥ ठेवठेणोगम्मइ, चउरो जा कप्प कीलि-  
 याईसु ॥ चउसु डु डु कप्पवुद्धी, पढमेणं जाव-  
 सिद्धीवि ॥ १६२ ॥ समचउरंसे नग्गो, हसाइ वा-  
 मणय खुज्जा हुंमेय ॥ जीवाण ठ संठाणा, सवव  
 सुलस्कं पढमं ॥ १६३ ॥ नाहीए उवरि बिअं,  
 तई अमहो पिठि उयर उरवज्जां ॥ सिर गीव  
 पाणिपाए, सुलस्कणं तं चउठं तु ॥ १६४ ॥ विव-  
 रीयं पंचमगं, सवव अलस्कणं जवे ठठं ॥ गप्पय  
 नर तिरिय ठहा, सुरा समा हुंरुया सेसा ॥ १६५ ॥  
 इति देवानां गतिद्वारं, अधुना आगतिद्वार माह  
 ॥ जंति सुरा संखाउ य, गप्पय पज्जात मणुयति-  
 रिएसु ॥ पज्जात्ते सुय बायर जूदग पत्तेयग वणेषु  
 ॥ १६६ ॥ तव्ववि सणं कुमारं, प्पज्जिई एगिंदि-  
 एसु नो जंति ॥ आणय पमुहा चविउं, मणुए-  
 सु चेव गठंति ॥ १६७ ॥ दोकप्प कायसेवी, दो  
 दो दो फरिस रूव सदेहिं ॥ चउरो मणेणु वरिमा  
 अप्पवियारा अणंतसुहा ॥ १६८ ॥ जं च काम-

सुहं लोए, जं च दिवं महासुहं ॥ वीयराय सुह-  
 स्सेय, एतं जागं पि नग्घई ॥ १६९ ॥ उववाउं देवीणं,  
 कप्पडुगं जा परो सहस्सारो ॥ गमणा गमणं नढी,  
 अच्चुय परउं सुराणं पि ॥ १७० ॥ तिपलिय ति-  
 सार तेरस, साराकप्प डुग त्तइय लंत अहो ॥  
 किब्बिसिय नहुंति उवरिं, अच्चुय परउं जिउ-  
 गाई ॥ १७१ ॥ अपरिग्गह देवीणं, विमाण लस्का  
 ठ हुंति सोहम्मे ॥ पलियाई समया ठिय, तिइ-  
 जासिं जाव दसपलिया ॥ १७२ ॥ ताउं सणं कु-  
 मारा, एवं वहुंति पलिय दसगेहिं ॥ जा वंज  
 सुक्क आणय, आरण देवाण पन्नासा ॥ १७३ ॥  
 ईसाणे चउलस्का, साहिय पलियाइ समय अहि-  
 यठिई ॥ जा पनर पलिय जासिं, ताउं माहिंद-  
 देवाणं ॥ १७४ ॥ एएण कमेण जवे, समयाहिय  
 पलिय दसग बुद्धीए ॥ लंत सहसार पाणय, अ-  
 च्चुय देवाण पणपन्ना ॥ १७५ ॥ किण्हा नीला  
 काऊ, तेऊ पम्हाय सुक्कलेसाउं ॥ जवण वण  
 पढम चउले, सजोइस कप्पडुगे तेऊ ॥ १७६ ॥

कप्पतिय पम्हद्वेसा, लंताइसु सुक्कलेस हुंति सुरा  
 ॥ कणगात्र पवमकेसर, वष्साटुसु तिसु उवरि  
 धवला ॥ १७७ ॥ दसवास सहस्साइं, जहन्नमाउं  
 धरंति जे देवा ॥ तेसिं चउथा हारो, सत्तहि  
 थोवेहि ऊसासो ॥ १७८ ॥ आहि वाहि  
 विमुक्कस्स, नीसासूसास एगगो ॥ पाणू सत्तइमो  
 थोवो, सोवि सत्तगुणो लवो ॥ १७९ ॥ लवसत्त-  
 हत्तरीए, होइ मुहुत्तो इमम्मि ऊसासा ॥ सगतीस  
 सय तिहुत्तर, तीसगुणाते अहोरत्ते ॥ १८० ॥  
 लक्कं तेरस सहसा, नउयसयं अयरसंखयादेवे ॥  
 परकेहिं ऊसासो, वास सहस्सेहिं आहारो ॥ १८१ ॥  
 दसवास सहस्सुवरिं, समयाई जाव सागरं ऊणं  
 ॥ दिवसमुहुत्त पट्टता, आहारूसास सेसाणं  
 ॥ १८२ ॥ सरिरेणो उयाहारो, तथाइफासेण लोम-  
 आहारो ॥ परकेवाहारोपुण, कावलिउं होई ना-  
 यवो ॥ १८३ ॥ उया हारासंवे, अपजत्त पजत्त  
 लोमआहारो ॥ सुरनिरय एगिंदिविणा, सेस न-  
 वढा सपरकेवा ॥ १८४ ॥ सच्चित्त चित्तोज्जय, रूवो

आहार सवतिरिआणं ॥ सवमराणं च तहा,  
 सुरनेरइयाण अच्चित्तो ॥ १७५ ॥ आजो गाणा  
 जोगा, सवेसिं होइ लोम आहारो ॥ निरयाणं  
 अमणुत्तो, परिणमइ सुराण समणुत्तो ॥ १७६ ॥  
 तह विगल नारयाणं, अंतमुहुत्ता सहोइ उक्कोसो  
 पंचिदि तिरि नराणं, साहाविय ठठ अठमउ  
 ॥ १७७ ॥ विग्गहगइ मावन्ना, केवल्लिणो समुहया  
 अजोगी य ॥ सिद्धा य अणाहारा, सेसा आहा-  
 रगा जीवा ॥ १७८ ॥ केसठि मंस नह रो, म  
 रुहिर वसचम्म मुत्त पुरिसेहिं ॥ रहिया निम्मल  
 देहा, सुगंध निस्सास गय लेवा ॥ १७९ ॥ अंत-  
 मुहुत्तेणं चिय, पज्जत्ता तरुण पुरिस संकासा ॥  
 सवंगचूषणधरा, अजरानिरुया समा देवा ॥ १८० ॥  
 अणि मिस नयणामणक, ज्ञा साहण पुप्फदाम  
 अमिल्लाणा ॥ चउरंगुलेण चूमिं, न ठिबिंति सुरा  
 जिणा बिंति ॥ १८१ ॥ पंचसुजिणकद्धाणे, सु चेव  
 महारिसि तवाणुत्तावाउ ॥ जम्मं तरनेहेण य,  
 आगडंति सुरा इहयं ॥ १८२ ॥ संकंति दिव्वपे-

मा, विसय पसत्ता समत्त कत्तवा ॥ अणहीण म-  
 णुय कज्जा, नरत्तव मसुहं न इति सुरा ॥१९३॥  
 चत्तारि पंचजोयण, सयाइ गंधोय मणुय लोगस्स  
 ॥ उहं वच्चइ जेणं, नहु देवा तेण आवंति ॥  
 ॥ १९४ ॥ दो कप्प पढम पुढवी, दो दो दो बीय  
 तइयगं चउथिं ॥ चउ उवरिम उहीए, पासंती  
 पंचमं पुढविं ॥ १९५ ॥ ठठो ठग्गेविज्जा, सत्तमी-  
 यरे अणुत्तर सुराउ ॥ किंचूण लोगनालिं, असं-  
 खदीवुदहि तिरियं तु ॥ १९६ ॥ बहुअरगं उव-  
 रिमगा, उहं सविमाण चूलिय धयाइ ॥ ऊणऊ  
 सागरे सं, ख जोयणा तप्पर मसंखा ॥ १९७ ॥  
 पण वीस जोयण लहु नारय जवणवण जोइ क-  
 प्पाणं ॥ गेविज्ज णुत्तराणय, जहसंखं उहियागारा  
 ॥ १९८ ॥ तप्पागारे पट्ठग, परुहग ऊल्लरि मु-  
 हंग पुप्फजवे ॥ तिरिय मणुएसु उहि, नाणाविह  
 सठिउत्तणिओ ॥ १९९ ॥ उहं जवण वणाणं, बहुगो-  
 वेमाणियाण होउही ॥ नारय जोइस तिरियं, नर  
 तिरिगाणं अणेगविहो ॥ २०० ॥ इयदेवाणं ज-

णियं, ठिइ पमुहं नारयाण बुढामि ॥ इगतिन्नि  
 सतदससतर, अयर बावीस तित्तीसा ॥ २०१ ॥  
 सत्तसु पुढवीसुठिइ, जिठोवरिमाइ हिठ पुहवीए  
 ॥ होइ कमेण कणिठा, दसवास सहस्स पढमाण  
 ॥ २०२ ॥ नवइ सम सहस लस्का, पुवाणं कोन्नि  
 अयरदस जागा ॥ इक्किक्क जाग बुढी, जा अयरं  
 तेरसे पयरे ॥ २०३ ॥ इय जिठ जहणा पुण, दस-  
 वास सहस्स लस्क पयर दुगे ॥ सेसेसु उवरि  
 जिठा, अहो कणिठाउ पइं पुढवी ॥ २०४ ॥ उ-  
 वरि खिइ ठिइ विसेसो, सगपयर विहत्तु इत्थसं-  
 गुणिउं ॥ उवरिम खिइ ठिइ सहिउं, इत्थिय पय-  
 रम्मि उक्कोसा ॥ २०५ ॥ सत्तसु खित्तज वेयण,  
 अन्नन्न कयावि पहरणेहिं विणा ॥ पहरण कया  
 वि पंचसु, तिसु परमाहम्मिय कयाविं ॥ २०६ ॥  
 बंधण गइ संठाणा, जेया वप्पा य गंध रस फासा  
 ॥ अगुरु लहु सह दसहा असुहाविय पुग्गला नि-  
 रिण ॥ २०७ ॥ नरया दस विह वेयण सीउंसिण  
 खुह पिवास कंरूहिं ॥ परवस्सं जरदाहं, जय

सोगं खेव वेयंसि ॥ २०८ ॥ षण्ण कोमि अछ सछी,  
 लरका नव नवइ सहस पंचसया ॥ चुलसी अ-  
 हीयरोगा, ठछी तह सत्तमी नरए ॥ २०९ ॥ र-  
 यण प्पह सक्कर प्ह, वालय प्ह पंक प्हय धूम-  
 पहा ॥ तमपहा तम तमपहा, कमेण पुढबोण  
 गोत्ताइ ॥ २१० ॥ घम्मा वंसा सेला, अंजणरिछा  
 मघा य माघवई ॥ नामेहिं पुढवीउं, छत्ताइ छत्त  
 संगण ॥ २११ ॥ असीय बत्तिस अरुविस, वीसा  
 अठार सोल अरु सहसा ॥ लरकुवरि पुढवि पिंमो,  
 घणुदहि घण वाय तणुवाया ॥ २१२ ॥ गयणं च  
 पइछाणं, वीस सहस्साइं घणुदही पिंमो ॥ घण-  
 तणुवाया गासा, असंख जोयण जुया पिंमो ॥  
 ॥ २१३ ॥ न फुसंतिअल्लोगं चउ, दिसंषि पुढवी-  
 य बलयसंगहिया ॥ रयणाए वलयाणं, ठध पंचम  
 जोयणं सहं ॥ २१४ ॥ विस्कंजो घणउदही, घण-  
 तणु वायाण होइ जहसंखं ॥ सत्तिजाग गाऊयं,  
 गाऊयं तह गाऊय तिजागो ॥ २१५ ॥ पढम  
 महीवलएसु, खिविज्जा एयं कमेण बीयाए ॥ ६

ति चउ पंच ङ गुणं, तइया इसु तंपि खिव क-  
 मसो ॥ २१६ ॥ मझ्जेचिय पुढवि अहे, घणुदहि  
 पमुहाण पिंरु परिमाणं ॥ जणियं, तवो कमेणं,  
 हायइ जा वलय परिमाणं ॥ २१७ ॥ तीस पण-  
 वीस पणरस, दसतिप्पि पणूण एगलस्काइं ॥ पं-  
 चय निरया कमसो, चुलसीइ लस्काइ सत्तसु वि  
 ॥ २१८ ॥ तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्निग प-  
 यर सवि गुणवन्ना ॥ सोमंताई अप्पइ, ठाणंता  
 इंदया मझ्जे ॥ २१९ ॥ सोमंतउंठपढमो, बीउं  
 पुण रोरुय त्ति नामेण ॥ रंजो य तढ तइउं, होइ  
 चउढो य उप्पंतो ॥ २२० ॥ संजंतमसंजंतो बिप्पंतो  
 चेव सत्तमो निरउं ॥ अठमउं जंतो पुण, नवमो,  
 सीउंत्ति णायवो ॥ २२१ ॥ वक्कंतणु बुक्कंतो, वि-  
 कलो तह चेव रोरुउं निरउं ॥ पढमाए पुढवीए,  
 इंदिया एएबोधवा ॥ २२२ ॥ थणिए थणए य  
 तहा, मणए मणए य होइ नायवे ॥ घटे तह  
 संघटे, जिप्पे अय जिप्पए चेव ॥ २२३ ॥ लोले  
 लोलावत्ते, तहेव घण लोलुए य बोधवे ॥ बीयाए

पुढवीए, इक्कारस इंदिया एए ॥ ११४ ॥ तत्तो  
 तविउं तवणो, तावणो पंचमो य निह्दो ॥ ठठो  
 पुण पज्जलिउं, उप्पज्जलिउंयसत्तमउं ॥ ११५ ॥  
 संजलिउंअठमउं, संपज्जलिउं य नवमउं जणिउं ॥  
 तइयाए पुढवीए, नवइंदिय नारया ए ए ॥ ११६ ॥  
 आरे तारे मारे, वच्चे तमए य होइ नायवे ॥ खारु  
 खमे खंरुखमे, इंदय नरया य चउढीए ॥ ११७ ॥  
 खाए तमए य तहा, ऊसे ऊसंधए तहा तिमिसे  
 ॥ इह पंचम पुढवीए, पंच निरइंदया हुंति ॥  
 ॥ ११८ ॥ हिमवद्दल लल्लके, तिणिउनिर इंदयाय  
 ठठो ए ॥ एगो य सत्तमाए, अपइठाणो उ ना-  
 मेणं ॥ ११९ ॥ पुवेण होइकालो, अवरेण पइ-  
 ठिउं महाकालो ॥ रोरो दाहिणपासे, उत्तर पासे  
 महारो रो ॥ १२० ॥ तेहिंतो दिसि विदिसिं, वि-  
 णिग्गया अठ निरय आवलिया ॥ पढमे पयरे  
 दिसि गुण, वन्ना विदिसासु अरुयाला ॥ १२१ ॥  
 बीयाइसु पयरेसु, इग इग हीणाउ हुंति पंतीउं  
 ॥ जा सत्तमि महि पयरे, दिसि इक्किओ विदिसि

नन्दि ॥ २३२ ॥ इष्टप्यरेग दिसि, संखअरुगुणा  
 चउ विण इग संखा ॥ जह सीमंतय पयरे, एगु-  
 णनउया सया तिन्नी ॥ २३३ ॥ अपयठाणे पंचउ,  
 पढमो मुहमंतिमो हवइ भूमी ॥ मुह नूमि समा-  
 सऊं, पयरगुणं होइ सवधणं ॥ २३४ ॥ ठसवइ  
 सय तिवणा, सत्तसु पुढवीसु आवली निरया ॥  
 सेस तियासो लस्का, तिसय सियाला नवइ स-  
 हसा ॥ २३५ ॥ तिसहस्सुच्चा सवे, संखमसंखिज्जा  
 विञ्जका यामा ॥ पणयाल लस्क सीमं, तउंय ल-  
 स्कं अपइठाणो ॥ २३६ ॥ हिठा घणो सहस्सा,  
 उप्पिसे कुठमे सहस्सं तु ॥ मश्चे सहस्स सुसिरा  
 तिष्ठि सहस्सुस्सिया निरया ॥ २३७ ॥ ठसु हि-  
 ठोवरि जोयण, सहस्स बावन्न सट्ठचरिमाए ॥ पु-  
 ढवीए निरय रहिय, निरया सेसम्मि सव्वासु ॥ २३८ ॥  
 बिसहस्सूणा पुढवी, तिसहस गुणिएहिं नियय  
 पयरेहिं ॥ ऊणा रुवुण निय पयर, जाईया पढ-  
 मंतरयं ॥ २३९ ॥ तेसीया पंचसया, इक्कारस चैव  
 जोयण सहस्सा ॥ रयणा य पढमंतर, मेगोचिय

जोयण तिजागो ॥ २४० ॥ सत्ताणवइ सयाइं, बी-  
 याए पढमंतरं होइ ॥ पणहत्तरि तिन्निसया, बार-  
 सहस्सा य तइयाए ॥ २४१ ॥ ठावठसयं सोलस,  
 सहस्स पंका य दोति जागाय ॥ अट्ठाइज्जासयाइं,  
 पणवीस सहस्स धूमाए ॥ २४२ ॥ बावन्नसट्ठ स-  
 हसा, तमप्पजापढमंतरं होइ ॥ एगोचिअपढ-  
 मउ, अंतररहिउ तमतमाए ॥ २४३ ॥ पण्णठ  
 धणु ठ अंगुल, रयणाए देहमाणमुक्कोसं ॥ सेसासु  
 दुगुणं, दुगुणं पणधणुसय जावचरिमाए ॥ २४४ ॥  
 रयणाय पढमपयरे, हठतियं देहमाणमाणपयरं ॥  
 ठप्पणंगुलसट्ठा बुद्धीजातेरसे पुष्पं ॥ २४५ ॥ जं  
 देहपमाण उवरि, माए पुढवीइ अंतिमे पयरे ॥  
 तं चिय हिठि म पुढवी, पढमं पयरम्मि बोधवं  
 ॥ २४६ ॥ तं चेगूणग सगपयर, जइयं बीयाइ प-  
 यर बुद्धिजवे ॥ तिकर त्ति अंगुल करसत, अंगुला  
 सट्ठि गुण वीसं ॥ २४७ ॥ पणधणु अंगुलवीसं,  
 पणरसधणु झुण्णिणहठ सट्ठाय ॥ बासठिधणुहसट्ठा,  
 पण पुढवी पयर बुद्धिइमा ॥ २४८ ॥ इय साहा-

विय देहो, उत्तर वेउद्विउं य तहुगुणो ॥ दुविहो  
 वि जहण कमा, अंगुल असंख संखंसो ॥२४॥  
 सत्तसु चउवीस मुहू, सग, पनरदिणेग दु चउ  
 ठम्मासा ॥ उववाय चवणविरहो, उहेबारस मुहुत्त  
 गुरू ॥ २५० ॥ लहुउं दुहावि समउं, संखा पुण  
 सुरसमा मुण्येयवा ॥ संखाउ पजत्त पणिं, दितिरि  
 नरा जंति निरएसु ॥२५१॥ मिढादिठि महारं, ज  
 परिगहो तिव्वकोह निस्सोलो ॥ नरयाउयं निवंधई,  
 पावमई, रुद्धपरिणामो ॥ २५२ ॥ असन्नितरिसिव  
 पस्को, ससीह उरगिं णि जंति जा ठिं ॥ कमसो-  
 उक्कोसेणं, सत्तम पुढवी मणुय मढा ॥२५३॥ वाला  
 दाढी पस्की, जलयर नरया गया उ अइकूरा ॥  
 जंतिपुणो नरएसु, बाहुद्वेण न उण नियमो ॥  
 ॥२५४॥ दो पढम पुढवि गमणं, ठेवठे कीलियाइ  
 संघयणे ॥ इक्किक्क पुढविवुट्ठो, आइ तिलेसाउ  
 नरएसु ॥२५५॥ दुसु काऊ तइयाअे, काउ नीला  
 य नील पंकाए ॥ धुमा य नीलकिण्हा, दुसु किण्ह  
 हुंति लेस्साउ ॥२५६॥ सुर नारयाण ताउं, दव्वेस्सा

अवधिया जणिया ॥ जाव परावत्तीए, पुणएसिं  
 हुंति बद्धेस्सा ॥ २५७ ॥ निर उवट्टागप्पय, पजत्त-  
 संखाउ लद्धिए एसिं ॥ चक्कि हरिजुअल अरिहा,  
 जिण जइ दिसि सम्मपुहविकमा ॥ २५८ ॥ रय-  
 णाएउहि गाउय, चत्तारि ङुठ गुरु लहु कमेण ॥  
 पइ पुढवि गाउयद्धं हायइ जा सत्तमि इगद्धं ॥ २५९ ॥  
 ( नरय दारं सम्मत्तं, मणुयदारं जणइ ) ॥ गप्प-  
 नर ति पलियाऊ, ति गाऊ उक्कोस ते जहप्पेणं  
 ॥ मुब्बिम पुहावि अंत मु, हु अंगुल असंख जा-  
 गतणू ॥ २६० ॥ बारस मुहुत्त गप्पे, इयरे चउ-  
 वीस विरह उक्कोसो ॥ जम्म मरणे सुसमउ, ज-  
 हप्पसंखा सुरसमाणा ॥ २६१ ॥ सत्तमि महि ने-  
 रइए, तेऊ वाऊ असंख नर तिरिए ॥ मुच्छूण से-  
 सजीवा उप्पज्झांति नरजवम्मि ॥ २६२ ॥ सुर ने-  
 रइएहिंचिय, हवंति हरि अरिह चक्किबलदेवा  
 ॥ चउविह सुर चक्किबला, वेमाणिय हुंति हरि  
 अरिहा ॥ २६३ ॥ हरिणो मणुस्स रयणा, इ हुंति  
 नाणुत्तरोहिं देवेहिं ॥ जह संजव मुववाउ, हयगय

एगिंदि रयणाणं ॥ १६४ ॥ वामपमाणं चक्रं, ठत्तं  
 दंमं दुहत्तयं चम्मं ॥ बत्तीसंगुल खग्गो, सुवस्स का-  
 गिणि चउरंगुलिया ॥ १६५ ॥ चउरंगुलो दुअं-  
 गुल, पिहुलोय मणी पुरोहि गय तुरया ॥ सेणा-  
 वइ गाहावइ, वट्ठइ थी चक्कि रयणाइं ॥ १६६ ॥  
 चउरो आयुज गेहे जंमारे तिन्नि दुन्नि वेयट्ठे ॥  
 एगंरायगिहम्मिय, नियनयरे चेव चत्तारि ॥ १६७ ॥  
 नो सप्पे पंडूए, पिंगलए सव्वरयण महपजमे ॥  
 कालेय महाकाले, माणव गया महासंखे ॥ १६८ ॥  
 जंबुद्दीवे चउरो, सयाइ वीसुत्तराइ उक्कोसं ॥ रय-  
 णाइ जहस्सं पुण, हुंति विदेहंमि ठप्पणणा ॥ १६९ ॥  
 चक्रं धणुहं खग्गो, मणी गया तहय होइ वण-  
 माला ॥ संखो सत्तइमाइं, रयणाइं वासुदेवस्स ॥  
 ॥ १७० ॥ संखनरा चउसुगइ, सु जंति पंचसु वि-  
 पढम संघयणे ॥ इग दुति जा अठसयं, इगस-  
 मए जंति ते सिद्धिं ॥ १७१ ॥ वीसि त्ति दसन-  
 पुंसग, पुरिसठसयं तुएग समएणं ॥ सिस्सइ गि-  
 हिअन्न सलिं, ग चउदस अठाहिय सयं च ॥

॥ १७१ ॥ गुरु लहु मश्चिम दोचउ, अछसयं उ-  
 ढ्हो तिरि य लोए चउ बावीसऽछसयं, दुसमुद्दे  
 तिन्नि सेसजले ॥ १७३ ॥ नरय तिरिया गयादस,  
 नरदेवगईउ वीस अछसयं ॥ दसरयणा सकर वा,  
 लुथाउ चउ पंक नू दगउ ॥ १७३ ॥ ठच्च वण-  
 स्सइ दस तिरि, तिरि ङि दस मणुय वीस ना-  
 रीउ ॥ असुराइ वंतरा दस, पण तद्देवीउ पत्तेयं  
 ॥ १७५ ॥ जोइ दस देविवीसं, विमाणियछसय  
 वीसदेवीउ ॥ तह पुव्वेएहिंतो, पुरिसोहोजण अ-  
 ठसयं ॥ १७६ ॥ सेसछजंगएसु, दसदस सिझंति  
 एगसमएणं ॥ विरहो ठमास गुरुउ, लहु समउ  
 चवणमिह नङ्गि ॥ १७७ ॥ अरु सग ठ पंच चउ  
 ति, नि दुनि इक्कोय सिज्जमाणेसु ॥ बत्तीसाइ-  
 सुसमया, निरंतरं अंतरं उवरिं ॥ १७८ ॥ बत्तीसा  
 अरुयाला, सठी बावत्तरो य बोधवा ॥ चुलसीई  
 ठएणवई, पुरहियमछुत्तरसयं च ॥ १७९ ॥ पण-  
 याल लखजोयण, विक्कंजा सिद्धिसिद्ध फलिह  
 विमला ॥ तदुवरि गजोयणंते, लोगंतो तह सि-

ऊर्ध्व ॥ २८० ॥ बहुमज्जादेसजाए, अठेवय जो-  
 यणाइ बाहिद्वं ॥ चरिमंते सुय तणुई, अंगुलसं-  
 खिज्जाई जागं ॥ २८१ ॥ तिन्निसया तिच्चीसा, घ-  
 णुत्ति जागोय कोसठप्रागो ॥ जं परमोगाहणाय,  
 तंते कोसस्स ठप्रागो ॥ २८२ ॥ एगा य होइ र-  
 यणी, अठेवय अंगुलेहिं साहीया ॥ एसा खलु  
 सिद्धाणं, जहणण उगाहणा जणिया ॥ २८३ ॥  
 मणुथदारं समत्तं ॥ तिरियदारं जणइं ॥ बावीस  
 सग ति दस वा, स सहस गिणि तिदिण बेइंदिं-  
 याईसु ॥ बारस वासुण पण दिण, ठम्मास  
 तिपलिय ठिई जिठा ॥ २८४ ॥ सण्हाय सुद्ध  
 वालुय, मणोसिला सक्कराय खर पुढवी ॥ इग  
 बार चउदसोलस, ठारस बावीस समसहसा ॥  
 २८५ ॥ गप्प जुय जलयरो जय, गप्पोरग पुव को-  
 मि उक्कोसा ॥ गप्पचउप्पय पक्खिसु, तिपलिय  
 पलियाअसंखंसो ॥ २८६ ॥ पुवस्स उपरिमाणं,  
 सय्यरि खलु वास कोमि लस्काय ॥ ठप्पणं च  
 सहस्सा, बोधवा वासकोमीणं ॥ २८७ ॥ संमुत्थिम

पणिंदि थलखयर, उरग नूयगा जिष्ठ ठिइ कम-  
 सो ॥ वास सहस्सा चुलसी, बिसत्तरि तिपस बा-  
 याला ॥२७७॥ एसा पुढवाईणं, जव छिईसंपयंतु  
 कायठिई ॥ चउ एगिंदिसु णेया, उसप्पिणीउं  
 असंखिज्जा ॥२७८॥ ताउ वणंमिअणंता, संखिज्जा  
 वास सहस विगळेसु ॥ पचिंदि तिरिनरेसु, सतठ  
 जवाउ उक्कोसा, ॥२७९॥ सवेसिंपि जहसा, अंत-  
 मुहुत्तं जवेय काए य ॥ जोयण सहस्स महियं, ए-  
 गिंदि य देह मुक्कोसं, ॥२८०॥ वि ति चउरिंदिसरीरं,  
 बारस जोयण तिकोस चउकोसं ॥ जोयण सहस्सप-  
 णिंदिय, उहे वुडं विसेसंतु ॥२८१॥ अंगुल असंख  
 जागो, सुहुम निगोउं असंख गुणवाज ॥ तो अ-  
 गणितउं आज, तत्तो सुहुमा जवेपुढवी ॥२८२॥  
 तो बायर वाज गणी, आज पुढवी निगोय अणुक-  
 मसो ॥ पत्तेयवणसरीरं, अहियं जोयणसहस्संतु  
 ॥२८३॥ उस्सेहंगुलजोयण, सहस्समाणे जलासए ने-  
 यं ॥ तं वल्लि पउम पमुहं, अउं परं पुढविरूवंतु ॥२८४॥  
 बारस जोयण संखो, तिकोस गुम्मीय जोयणं

जमरो ॥ मुठिम चउपयचुयगुरग, गाऊधणु जो-  
 यण पहुत्तं ॥ २९६ ॥ गप्प चउप्पय ठग्गा, उयाइं  
 चुयगाउ गाउय पुहुत्तं ॥ जोयण सहस्स मुरगा,  
 मग्गा उज्जए विय सहस्सं ॥ २९७ ॥ पक्कि दुग  
 धणुपुहुत्तं, सवाणंगुलअसंखजागलहू ॥ विरहो वि-  
 गला सन्नी, ए जम्म मरणेसुअंतमुहू ॥ २९८ ॥  
 गप्पे मुहुत्त वारस, गुरुत्तं लहु समय संखसुर  
 तुट्ठा ॥ अणुसमय मसंखिज्जा, एगिंदिय हुंतिय  
 चवंति ॥ २९९ ॥ वणकाइत्तं अणंता, इक्किकात्तं  
 वि जं निगोयात्तं ॥ निच्चमसंखो जागो, अणंत-  
 जीवो चयइ एइ ॥ ३०० ॥ गोलाय असंखिज्जा,  
 असंख निग्गोयत्तं हवइ गोलो ॥ इक्किक्कंमि निगोए,  
 अणंत जीवा मुण्येयवा ॥ ३०१ ॥ अत्थि अणंता  
 जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ॥ उप्प-  
 ज्जांति चयंति य, पुणोवि तत्तेव तत्तेवा ॥ ३०२ ॥  
 सबोवि किसलत्तं खलु, उगाममाणो अणंतत्तं ज-  
 णित्तं ॥ सोचेव विवट्ठंतो, होइ परित्तो अणंतो  
 वा ॥ ३०३ ॥ जया मोहोदत्तं तिवो, अन्नाणं खु

महप्त्रयं ॥ पेलवं वेयणीयं तु, तथा एगिंदियत्त-  
 णं ॥ ३०४ ॥ तिरिणसु जंति संखा, उतिरिनरा-  
 ज्जाट्टु कप्पदेवाउं ॥ पज्जात्तसंख गप्त्रय, बायर  
 नूदगपरित्तेसु ॥ ३०५ ॥ तो सहसारंतसुरा, निरया  
 पज्जात्तसंख गप्त्रेसु ॥ संखपणिंदिय तिरिया म-  
 रिउं चउसु वि गइसु जंति ॥ ३०६ ॥ थावर वि-  
 गला नियमा, संखाउ य तिरि नरेसु गहंति ॥  
 विगला लज्जिज्जाविरइं, सम्मंपि न तेउ वाउ चुया  
 ॥ ३०७ ॥ पुढवी दग परितवणा, बायर पज्जात्त  
 हुंति चउलेसा ॥ गप्त्रय तिरिय नराणं, ठ्वेसा  
 तिस्सिसेसाणं ॥ ३०८ ॥ अंतमुहुत्तंमिगए, अंत-  
 मुहुत्तंमिसेसए चेव ॥ लेसाहिपरिणयाहिं, जीवा-  
 वच्चंति परलोयं ॥ ३०९ ॥ तिरिनरआगामि जवे,  
 लेस्साए अइ गए सुरा निरया ॥ पुव्वजव ले-  
 स्ससेसे, अंतमुहुत्ते मरणमिति ॥ ३१० ॥ अंत-  
 मुहुत्तछिइउं, तिरिय नराणं हवंति लेस्साउं ॥ च-  
 रिमा नराण पुण नव, वासूणा पुव्वकोमीवि ॥ ३११ ॥  
 तिरियाण वि ठिइपमुहं, जणिय मसेसंपि संपई

बुद्धं ॥ अजिहिय दारप्रहियं, चउगइ जीवाण  
 सामएणं ॥ ३१२ ॥ देवा असंख नर तिरि, इब्बीपुं  
 वेय गप्प नर तिरिया ॥ संखाउया तिवेया, नपुं-  
 सगा नारयाईया ॥ ३१३ ॥ आयंगुलेण वहुं, सरी-  
 रमुस्सेह अंगुलेण तहा ॥ नग पुढवि विमाणाई,  
 मिणसु पमाणंगुलेणं तु ॥ ३१४ ॥ सत्तेण सुतिस्के-  
 ण वि, ठिचुं जित्तुचजं किर न सक्का ॥ तं परमाणुं  
 सिद्धा, वयंतिआइं पमाणानं ॥ ३१५ ॥ परमाणू  
 तसरेणू, रहरेणू वालअगल्लिस्का य ॥ जूय जवो  
 अठगुणो, कमेण उस्सेह अंगुलयं ॥ ६१६ ॥ अं-  
 गुल्लठकं पाउं, सो दुगुण विह्वि सा दुगुण हब्बो  
 ॥ चउहत्तं धणु दु सहस, कोसो ते जोयणं चउरो  
 ॥ ३१७ ॥ चउसयगुणं पमाणं, गुल्लमुस्सेहंगुल्लाउ  
 बोधवं ॥ उस्सेहंगुल्लदुगुणं वीरस्सायंगुलं जणियं  
 ॥ ३१८ ॥ पुढवाइसु पत्तेयं, सग वणपत्तेयणंतदस  
 चउद ॥ विगळे दु दु सुर नारय, तिरिचउ चउ  
 चउदस नरेसु ॥ ३१९ ॥ जोणीण हुंति लस्का,  
 सब्बे चुलसी इहेव धिप्पंति ॥ समवन्नाईजेया, ए-

गत्तेणैव सामन्ना ॥ ३१० ॥ एगिंदिणसु पंचसु,  
 बार सग तिसत्त अठवीसा य ॥ विगळेसु सत्त  
 अरु नव, जल खह चउपय उरग जुयगे ॥ ३११ ॥  
 अरुत्तेरस बारस, दस दस नवगं नरामरे निरण  
 ॥ बारस ठवीस पणविस, हुंति कुले कोमि ल-  
 स्काइ ॥ ३१२ ॥ इग कोमि सत्तणवई, लस्का सट्ठा  
 कुलाण कोमीणं ॥ संवुरु जोणि सुरेगिं, दि नारया  
 वियरु विगल गण्जु जया ॥ ३१३ ॥ अचित्त जो-  
 णि सुरनिरय, मीसगगण्जे तिजेय सेसाणं ॥ सी  
 उसिण निरय सुर गज, मीसत्ते, उसिण सेस  
 तिहा ॥ ३१४ ॥ हय गण्ज संखवत्ता, जोणी कुम्मु-  
 न्नयाइं जायंति ॥ अरिह हरि चक्किरामा, वंसी  
 पत्ताइ सेसनरा ॥ ३१५ ॥ आउस्स बंधकालो, अ-  
 बाह कालोय अंत समउं य ॥ अपवत्तण णपवत्तण,  
 उवक्कम णुवक्कमा जणिया ॥ ३१६ ॥ बंधंति देव  
 नारय, असंख नर तिरि ठमास सेसाऊ ॥ पर-  
 जविया ऊसेसा, निरुवक्कमतिजागसेसाउ ॥ ३१७ ॥  
 सोवक्कमा उया पुण, सेसतिजागे अहव नवम-

ज्ञागे ॥ सत्तावीस इमे वा अंतमुहुत्तं तिमे वा वि  
 ॥ ३२७ ॥ जइमे ज्ञागे बंधो, आउस्स जवे अवा-  
 कालो सो ॥ अंतेउजुगइ इग सम, य वक्क चउ  
 पंच समयंता ॥ ३२८ ॥ उज्जु गइ पढम समए,  
 परजवियं आउयं तहा हारो ॥ वक्काइ बीय स-  
 मए, परजवियाउं उदयमेई ॥ ३२९ ॥ इग दु ति  
 चउ वक्कासु, दुगाइ समएसु परजवाहारो ॥ दुग  
 वक्काइ सु समया, इग दो तिन्नी अणाहारा ॥  
 ॥ ३३० ॥ बहुकाल वेयणिज्जां, कम्मं अप्पेण ज-  
 मिह कालेणं ॥ वेइज्जाइ जुगवंचिय, उइन्न सव-  
 प्पएसगं ॥ ३३१ ॥ अपवत्तणिज्जामेयं, आउं अ-  
 हवा असेसकम्मंपि ॥ बंध समएविवद्धं, सिद्धिं  
 चिय तं जहाजोगं ॥ ३३२ ॥ जं पुण गाढ निकायण,  
 बंधेणं पुव्वमेव किल बद्धं ॥ तं होइ अण पवत्तण, जु-  
 गं कम वेयणिज्जा फलं ॥ ३३३ ॥ उत्तम चरम  
 सरीरा, सुर नेरइया असंख नर तिरिया ॥ हुंति  
 निरुवक्कमाउं, दुहावि सेसा मुणेयवा ॥ ३३४ ॥  
 जेणाउ मुवकमि जइ, अप्पसमहेण इयर गेणावि

॥ सो अज्जवसाणाई, उवक्कम एवक्कमो इयरो ॥  
 ॥ ३३६ ॥ अज्जवसाण निमित्ते, आहारे वेयणा  
 परागाए ॥ फासेआणा पाणू, सत्तविहं जिज्जाए  
 आउं ॥ ३३७ ॥ आहार सरीरिंदिय, पज्जात्ती  
 आणपाण ज्ञासमणे ॥ चउ पंच पंच ठप्पिय, इग  
 विगळा सन्नि सन्नीणं ॥ ३३८ ॥ आहारसरीरिं-  
 दिय, ज्ञासास वज्ज मणोज्जिनिवत्ती ॥ होइ जउ  
 दक्षियाज्ज, करणं पइसाउ पज्जात्ती ॥ ३३९ ॥ पण  
 इंदिय तिबळूसा, साज्ज दस पाण चउ ठ सग  
 अछ ॥ इग दु ति चउरिंदीणं, असन्नि सन्नीण  
 नव दस य ॥ ३४० ॥ आहारे जय मेहुण, परि-  
 गहा कोह माण माया य ॥ लोजे उहे लोगे,  
 दस सळा हुंति सवेसिं ॥ ३४१ ॥ सुह दुह मोहा  
 सन्ना, वितिगिन्ना चउदमा मुणेयवा ॥ सोए तह  
 धम्म सणा, सोल समा हवइ मणुएसु ॥ ३४२ ॥  
 संखित्तासंघयणी, गुरुतर संघयणि मज्जाउं एसा ॥  
 सिरि सिरि चंद मुणिंदे, ए निम्मिया अप्प पढ-  
 ण्णा ॥ ३४३ ॥ संखित्तयरीउ इमा, सरीरमोगो-

हणा य संघयणा ॥ सन्ना संठाण कसा, य लेसिं-  
 दिय दु समुग्धाया ॥ ३४४ ॥ दिठ्ठी दंसण नाणे,  
 जोगुवर्णगो ववाय चवण ठिई ॥ पज्जात्ति किमा-  
 हारे, सन्निगई आगई वेए ॥ ३४५ ॥ तिरिया म-  
 णुया काया, तह गावीया चउक्कगा चउरो ॥ देवा  
 नेरइया वा, अठारस जावरासीउ ॥ ३४६ ॥ एगा  
 कोमी सत सठि, लक्का सतहुत्तरी सहस्साय ॥  
 दोय सया सोलहिया, आवलियाणं मुहुत्तंमि  
 ॥ ३४७ ॥ पणसठि सहस पणसय, ठत्तीसा इग  
 मुहुत्त खुम्भजवा ॥ दोय सया ठप्पसा, आवलिया  
 एग खुम्भजवे ॥ ३४८ ॥ मलहारि हेमसूरि, ए  
 सोसलेसेण विरइयं सम्मं ॥ संघयणि रयण मेयं,  
 नंदउ जा वीरजिण तिहं ॥ ३४९ ॥ इति श्री  
 त्रैलोक्यदीपिका नामसंग्रहणीसंपूर्णा ॥

॥ अथ श्री अजव्य कुलकम् लिख्यते ॥

जह अजविय जीवेहिं, न फासिया एव  
 माइया जावा ॥ इंदत्तमनुत्तरसुर, सिलायनर

नारयत्तं च ॥ १ ॥ केंवल्लिगणहरहत्ते, पवज्जा  
 तिष्ठवत्तरं दाणं ॥ पवयण सुरी सुरत्तं, लोगंतिय  
 देवसामित्तं ॥ २ ॥ तायत्तीससुरत्तं, परमाह-  
 म्मिय जुयलमणुयत्तं ॥ संजिन्नसोय तह, पुवज्जरा  
 हारय पुत्तायत्तं ॥ ३ ॥ मइणाणाइसुलज्जी, सुपत्त-  
 दाणं समाहिमरणत्तं ॥ चारण दुग महुसिप्पय,  
 खीरासव खीणठाणत्तं ॥ ४ ॥ तिष्ठयर तिष्ठपप्पिमा,  
 तणु परिजोगाइ कारणेवि पुणो ॥ पुढवाइय चावंमि  
 वि, अजवज्जीवेहिं नो पत्तं ॥ ५ ॥ चउदस रयण-  
 त्तंपि, पत्तं न पुणो विमाणसामित्तं ॥ सम्मत्त नाण  
 संयम, तवाइ चावा न चावदुगे ॥ ६ ॥ अणुज्ज-  
 वजुत्ता जत्ती, जीणाण साहम्मियाण वज्जद्वं ॥ नय  
 साहेइ अजवो, संविग्गत्तं न सुप्पस्कं ॥ ७ ॥  
 जिणजणय जणणि जाया, जिणजस्का जस्कणी  
 जुगपहाणा ॥ आयरियपयाइ दसगं, परमव गुणदु  
 मप्पत्तं ॥ ८ ॥ अणुबंध हेउ सरूवा, तव अहिंसा  
 तिहा जिणुदिठा ॥ दव्वेणय चावेणय, दुहावि  
 तेसिं न संपत्ता ॥ ९ ॥

---

॥ अथ श्री पुण्यकुलकम् ५५ बोल ॥

संपुन्न इंदियत्तं, माणुसत्तं च आयरिय खित्तं  
 ॥ जाइ कुल जिणधम्मो, लब्भंति पन्नूय पुत्तेहिं ॥ १ ॥  
 जिण चलणकमल सेवा, सुगुरुपायपज्जुवासणं चेव ॥  
 सज्जाय वाय वरुत्तं, लब्भंति पभूयपुत्तेहिं ॥ २ ॥  
 सुद्धो बोद्धो सुगुरुहिं, संगमो उवसमं दयालुत्तं ॥  
 दाखिन्नं करणंजं, लब्भंति पन्नूयपुत्तेहिं ॥ ३ ॥  
 समत्तं निच्चलत्तं, वयाण परिपालणं अमायत्तं ॥  
 पढणं गुणणं विणउं, लब्भंति पभूयपुत्तेहिं ॥ ४ ॥  
 उस्सग्गे अववाये, निव्वह विवहारंमि निउणत्तं ॥  
 मणवयणकायसुद्धी, लब्भंति पभूयपुत्तेहिं ॥ ५ ॥  
 अवियारं तारुन्नं, जिणाणं राउं परोवियारत्तं ॥  
 निक्कंपयाय जाणे, लब्भंति पभूयपुत्तेहिं ॥ ६ ॥  
 परनिंदापरिहारो, अप्पसंसा अत्तणो गुणाणं च ॥  
 संवेगो निव्वेओ, लप्पंति पभूयपुत्तेहिं ॥ ७ ॥  
 निम्मलसीलाब्भासो, दाणुद्धासो विवेगसंवासो ॥  
 चउगई दुह संतासो, लब्भंति पभूयपुत्तेहिं ॥ ८ ॥

दुक्कम गरिहा सुक्कमा-एण मोयणं पायञ्चित्त तव  
चरणं ॥ सुह जाण नमुक्कारो, लब्धंति पभूयपुत्तेहिं  
॥ ए ॥ इय गुणमणिजंकारो, सामग्गी पाविउण  
जेणकउ ॥ विञ्चिन्नमोहपासा, लहंति ते सासयं  
सुस्कं ॥ १० ॥

॥ अथ श्री पुण्यपाप कुलकम् ॥

उत्तीस दिन सहसा, वाससए होइ आउ  
परिमाणं ॥ जिण्जंतं पईसमयं, पिण्णउ धम्मंमि  
जइअव्वं ॥ १ ॥ जइ पोसहसहीउ, तवनियमगुणेहिं  
गमइ एगदिणं ॥ ता बंधइ देवाउ, इतिअ मित्ताइं  
पलियाइं ॥ २ ॥ सगवीसंकोफी सया, सतहत्तरी  
कोमिलख सहसाय ॥ सत्तसया सतहुत्तरि, नव-  
जागा सत्त पलियस्स ॥ ३ ॥ अछासीई सहस्सा,  
वाससए दुन्नि लख पहराणं ॥ एगोविअ जइ  
पहरो, धम्मजुउ ता इमो लाहो ॥ ४ ॥ तिसय  
सगं चत्त कोमि, लखाबावीस सहस बावीसा ॥  
दुसय दुवीस दुजागा, सुराउ बंधोय इगपहरे

॥ ५ ॥ दसलखअसीय सहसा, मुहुत्त संखाय होइ  
 वास सए ॥ जइ सामाइअसहिउं, एगोविअता  
 इमो लाहो ॥ ६ ॥ बाणवय कोमीउं, लरका गुण-  
 सठि सहस पणवीसं ॥ नवसय पणवीस जूआ,  
 सतिहा अरुजाग पलिअस्स ॥ ७ ॥ वाससए  
 घमिआणं, लखिगवीसं सहस्स तह सठी ॥ एगा-  
 विअ धम्म जुआ, जइ ता लाहो इमोहोइ ॥ ८ ॥  
 ठायाल कोमी गुणतीस-लरक ठासठी सहस्स-  
 सयनवगं ॥ तेसठी किंचूणा, सुराउं बंधोई इग-  
 घमिए ॥ ९ ॥ सठी अहोरत्तेणं, घमीआउं जस्स  
 जंति पुरिसस्स ॥ निअमेणवि रहीआउं, सो  
 दिअहउं निष्फलोतस्स ॥ १० ॥ चत्तारीअ कोमि-  
 सया, कोमीउं सतलरक अरुयाला ॥ चालीसं च  
 सहस्सा, वाससय हुंती ऊसासा ॥ ११ ॥ इक्को  
 विअ ऊसासो, नय रहिउं होई पूणयपावेहिं ॥  
 जइ पुणेणं सहिउं, एगोविअ ता इमो लाहो ॥ १२ ॥  
 लरक दुग सहस पण चत्तं, चउसया अठ चेव  
 पलियाई ॥ किंचूणा चउजागा, सुराउं बंधो ईगु-

सासे ॥ १३ ॥ एगुणवीसं लस्का, तेसठी सहस्स  
 दुसय सत्तठी ॥ पलियाइं देवाउं, बंधइं नवकार  
 उस्सगो ॥ १४ ॥ लस्किगसठी पणती—स सहस-  
 दुसय दस पल्लिअ देवाउं ॥ बंधइ अहिअं जीवो,  
 पणवीसुसास उस्सगो ॥ १५ ॥ एवं पावई परायाणं,  
 हवेउं निरयाउ अस्स बंधोवि ॥ इअ नाउंसिरिजिण  
 कि—त्तिअंमि धम्मंमि उज्जमंकुणह ॥ १६ ॥

॥ अथ श्री गौतमकुलकम् लिख्यते ॥

बुद्धानरा अत्थपरा हवंति, मूढा नरा काम-  
 परा हवंति ॥ बुद्धानरा खंतिपरा हवंति, मिस्सा  
 नरा तिनिवि आयरंति ॥ १ ॥ ते पंजिया जे वि-  
 रया विरोहे, ते साहुणो जे समयंचरंति ॥ ते  
 सत्तिणो जे न चयंति धम्मं, ते बंधवा जे वसणे-  
 हवंति ॥ २ ॥ कोहाजिञ्जूआ न सुहं लहंति,  
 माणंसीणो सोयपराहवंति ॥ मायाविणो हुंति  
 परस्सपेसा बुद्धामहिब्बानरयंउविति ॥ ३ ॥ कोहो  
 विसं किं अमयंअहिंसा, माणोअरीकिं हियमप्प-

माउं ॥ माया जयकिंसरणंतु सच्चं, लोहो दुहो  
 किंसुहमाहतुठी ॥ ४ ॥ बुद्धिअचंरं जयए वीणीयं,  
 कुळं कुशीलंजयए अकित्ती ॥ संजिन्नचितं जयए  
 अलढी, सच्चेठीयं संजयए सिरीय ॥ ५ ॥ चयंति  
 मित्ताणि नरं कयग्घं, चयंति पावाइ मुणिं जयंतं ॥  
 चयंति सुक्काणिसराणिहंसा, चणइ बुद्धीकुवियं-  
 मणुस्सं ॥ ६ ॥ असंपहारे कहिए विलावो, अई-  
 यअत्थेकहिअे विलावो ॥ विखितचित्ते कहिए-  
 विलावो, बहु कुसीसेकहिएविलावो ॥ ७ ॥ दुठा  
 हीवा दंरुपरा हवंति, विज्जाहरा मंतपरा हवंति ॥  
 मुक्का नरा कोवपरा हवंति, सुसाहुणो तत्तपरा  
 हवंति ॥ ८ ॥ सोहा जवे उग्गतवस्स खंती, समा  
 हिजोगो पसमस्ससोहा ॥ नाणं सुजाणं चरणस्स-  
 सोहा, सीसस्स सोहा विणएपवित्ती ॥ ९ ॥ अन्नू-  
 सणोसोहइ बंजयारी, अकिंचणो सोहइ दिक्क-  
 धारी ॥ बुद्धिजुठं सोहइ रायमंती, लज्जाजुठं  
 सोहइ एगपत्ति ॥ १० ॥ अप्पाअरीहोइअणवट्ठि-  
 यस्स, अप्पा जसो सीलमउंनरस्स ॥ अप्पादुरप्पा

अणवच्छियस्स, अप्पाजीअप्पा सरणं गर्हय ॥११॥  
 न धम्मकज्जा परमत्थि कज्जां, न पाणिहिंसा परमं  
 अकज्जां ॥ न पेमरागा परमत्थि बंधो, न बोहि-  
 द्दाज्जा परमत्थिदाभो ॥ १२ ॥ न सेवियद्वा  
 पमया परक्का, न सेवियद्वा पुरिसा अविज्जा ॥ न  
 सेवियद्वा अहिमाणी हिणा, न सेवियद्वा  
 पिसुणा मणुस्सा ॥ १३ ॥ जे धम्मिया ते  
 खलुसेवियद्वा, जे पंमिया ते खलु पूढियद्वा ॥ जे  
 साहुणोतेअज्जिवंदियद्वा, जे निम्ममा ते पमिदा-  
 जियद्वा ॥ १४ ॥ पूत्ताय सीसाय समंविजंत्ता, रिसी  
 य देवाय समं विजत्ता ॥ मुक्कातिरिक्काय समं  
 विजत्ता, मुआदरिद्दाय समं विजत्ता ॥ १५ ॥  
 सद्वाकलाधम्मकला जिणाइं, सद्वाकहाधम्मकहा  
 जिणाइं ॥ सद्वं बलं धम्मबलं जिणाइं, सद्वं सुहं  
 धम्मसुहं जिणाइं ॥ १६ ॥ जूए पसत्तस्स धणस्स  
 नासो, मंसं पसत्तस्स दयाइनासो ॥ मज्झंपसत्तस्स  
 जसस्स नासो, वेसा पसत्तस्स कुलस्स नासो ॥१७॥  
 हिंसा पसत्तस्स सुधम्मनासो, चोरीपसत्तस्स सरी-

रनासो ॥ तहा परत्थीसु पसत्तयस्स, सबस्स नासो  
 अहमा गर्हय ॥ १७ ॥ दाणं दरिद्वस्स पहुस्स खंती,  
 इच्छा निरोहोइ सुहोइयस्स ॥ तारुन्नए इंदिय  
 निग्गहो य, चत्तारि एयाणि सुदुक्कराणि ॥ १८ ॥  
 असासयं जीवियमाहु लोए, धम्मंचरे साहुजिणो-  
 वइठं ॥ धम्मो य ताणं सरणं गर्ह य, धम्मं निसे-  
 वित्तुसुहं लहंति ॥ १९ ॥

॥ अथ श्री दानकुलकम् लिख्यते ॥

परिहरिय रज्जसारो, उप्पाप्पियसंजमिक्कगुरु-  
 चारो ॥ खंधाउ देवदूसं, वियरंतो जयउ वीरजिणो  
 ॥ १ ॥ धम्मत्थकामजेया, तिविहं दाणं जयंमि  
 विस्कायं ॥ तहवि य जिणंदमुणिणो, धम्मिय-  
 दाणं पसंसंति ॥ २ ॥ दाणं सोहग्गकरं, दाणं  
 आरुग्गकारणं परमं ॥ दाणं जोगनिहाणं, दाणं ठाणं  
 गुणगुणाणं ॥ ३ ॥ दाणेण फुरइ कित्ती, दाणेण  
 य होइ निम्मला कंती ॥ दाणावज्जिय हियउ,  
 वयरी वि हु पाणियं वहइ ॥ ४ ॥ धणसब्बवाह-

જમ્મે, જં ઘયદાણં કય સુસાહુણં ॥ તક્કારણમુસ-  
 જજિણો, તેલુક્કપિયામહો જાઉં ॥ ૫ ॥ કરુણાઠ  
 દિન્ન દાણં, જમ્મંતર ગહિય પુન્ન કિરિયાણં ॥  
 તિષ્ઠયર ચક્ક રિઠ્ઠિં, સંપત્તો સંતિનાહોવિ ॥ ૬ ॥  
 પંચસય સાહુ જોશ્ચણ, દાણાવજ્ઞિય સુપુન્નપજ્જારો  
 ॥ અઠ્ઠરિય ત્તરિય ત્તરિત્તં, ત્તરહો ત્તરહાહિવો જાઉં  
 ॥ ૭ ॥ મુલ્લં વિસ્યાવિ દાત્તં, ગિલાણ પમ્મિચ્ચરણ  
 જોગવહૂણિ ॥ સિદ્ધોચ્ચ રયણકંબલ, ચંદણવિણિ-  
 ત્તવિ તંમિ ત્તવે ॥ ૮ ॥ દાઝણ સ્વીર દાણં, તવેણ  
 સુસિચ્ચંગ સાહુણો ધણિચ્ચં ॥ જણ જણિય ચમ-  
 ક્કારો, સંજાઉં સાલ્લિત્તહોવિ ॥ ૯ ॥ જમ્મંતર  
 દાણાઉં, ઉદ્ધસિયા પુવ્વ કુસલ જ્ઞાણાઉં ॥ કય-  
 ઉત્તો કયપુત્તો, જોગાણં જાયણં જાઉં ॥ ૧૦ ॥  
 ઘયપૂસ વત્થપૂસા, મહરિસિણો દોસ લેસ પરિહીણ  
 ॥ લક્કીં સયલ ગઢો, વગ્ગહગા સુગ્ગં પત્તા ॥ ૧૧ ॥  
 જીવંતસામિ પમ્મિમાં, સાસણં વિયરિઝ્ઞણ ત્તત્તીણ  
 ॥ પવ્વંજણ સિદ્ધો, ઉદાણો ચરમ રાયરિસી  
 ॥ ૧૨ ॥ જિણહરમંમિયવસુદ્ધા, દાત્તં અણુકંપજ-

त्तिदाणाइं ॥ तिष्ठपञ्चावगरोहिं, संपत्तो संपद्दराया  
 ॥ १३ ॥ दाउं सद्धा सुद्धे, सुद्धे कुम्मासए महा-  
 मुणिणो ॥ सिरि मूलदेव कुमरो, रज्जासिरिं पा-  
 विउं गुरुइं ॥ १४ ॥ अद्ददाण मुहर कविअण,  
 विरद्दअ सय संख कव विह्वरिअं ॥ विक्कमनरिंद  
 चरिअं, अज्जावि लोए परिप्फुरइ ॥ १५ ॥ तिय-  
 लोअ बंधवेहिं, तप्पव चरिमोहिं जिणवरिंदोहिं ॥  
 कय किच्चेहिवि दिन्नं । संवडरिअं महादाणं ॥ १६ ॥  
 सिरिसेयंसकुमारो, निस्सेयस सामिउं कहं न होइ  
 ॥ फासूअदाणपवाहो, पयासिउं जेण जरहंमि  
 ॥ १७ ॥ कहसान पसंसिज्जाइ, चंदणवाला जिणं-  
 ददाणेणं ॥ ठम्मासिय तवतविउं, निव्वविउं जेहिं  
 वीरजिणो ॥ १८ ॥ पढमाइं पारणाइं, अकरिंसु  
 करंति तह करिस्संति ॥ अरिहंता जगवंतो, जस्स  
 घरे तेसिं धुव सिद्धि ॥ १९ ॥ जिणजवणबिंब-  
 पुत्थय—संघसरूवेसु सत्तखित्तेसु ॥ वविअंधणंपि  
 जायइ, सिवफलय महो अणंतगुणं ॥ २० ॥

॥ अथ श्री शीलकुलकम् लिख्यते ॥

सोहृग्ग महा निहिणो, पाए पणमामि नेमि-  
जिणवइणो ॥ बालेण जुअबलेण, जणाइणो जेण  
निज्झिणिउं ॥ १ ॥ सीलं उत्तम वित्तं, सीलं जीवाण  
मंगलं परमं ॥ सीलं दोहृग्गहरं, सीलं सुक्काण  
कुलजवणं ॥ २ ॥ सीलं धम्म निहाणं, सीलं  
पावाण खंरुण जणियं ॥ सीलं जंतुण जए, अकि-  
त्तिमं मंरुणं पवरं ॥ ३ ॥ नरय पुवार निरुंजण,  
कवारु संपुरु सहोअर ष्ठायं ॥ सुरलोअधवलमंदिर,  
आरुहणे पवरनिस्सेणिं ॥ ४ ॥ सिरि उग्गसेणधूआ,  
रायमई लहउ सीलवइ रेहिं ॥ गिरि विवर गउं  
जीए, रहनेमी ठाविउं मग्गे ॥ ५ ॥ पज्जलिउंवि  
हु जलणो, सीलपज्जावेण पाणियं हवइ ॥ सा  
जयउं जए सीआ, जीसे पयका जसपकाया ॥ ६ ॥  
चाअणिजलेण चंपाए, जोइ उग्घाकियं पुवारतियं ॥  
कस्स न हरेइ चित्तं, तीय चरियं सुजहाए ॥ ७ ॥  
नंदउ नमया सुंदरि, सा सुचिरं जोइं पालियं

सीलं ॥ गहिलत्तणंपि काउं, सहिआय विमंबणा  
 विविहा ॥ ७ ॥ जइं कलावईए, जोसणरन्नंमि  
 रायचत्ताए ॥ जं सा सीलगुणेण, ठिनंग पुणन्नवा  
 जाया ॥ ८ ॥ सीलवइए सीलं, सक्कइ सक्कोवि  
 वन्नित्तं नेव ॥ रायनिउत्ता सचिवा, चउरोवि पवं-  
 चिआ जीए ॥ ९ ॥ सिरि वरूमाण पट्टणा,  
 सुधम्मलाजुत्ति जोइ पठविउं ॥ सा जयउ जए  
 सुलसा, सारयससिविमलसीलगुणा ॥ १० ॥ हरि-  
 हरबंजपुरंदर-मयजंजणपंचबाणबलदप्पो ॥ लोलाइ  
 जेण दल्लिउं, स थूलजहो दिसउं जइं ॥ ११ ॥  
 मणहरतारुन्नजरे, पड्डिज्जंतोवि तरुणि नियरेणं ॥  
 सुरगिरिनिच्चलचित्तो, सो वयरमहारिसी जयउं  
 ॥ १२ ॥ थुणियं तस्स न सक्का, सट्ठस्स सुदंसण-  
 स्स गुणनिवहो ॥ जो विसमसंकमेसुवि, पड्डिउंवि  
 अखंरसीलधणो ॥ १३ ॥ सुंदरि सुनंद चिह्वाणा,  
 मणोरमा अंजणा मिगावइअ ॥ जिणसासणसुप-  
 सिद्धा, महासइउं सुहं दिंतु ॥ १४ ॥ अच्चंकारि-  
 अचरिअं, सुणिऊणं को न धुणई किरसीसं ॥

जा अरुक्मिश्च सीला, जिह्ववश्च कयन्तिश्चाविदहं  
 ॥ १६ ॥ निय मित्तं निय ज्ञाया, निय जणउं निय  
 पियामहो वा वि ॥ नियपुत्तोवि कुसीलो, न वद्वहो  
 होइ लोआणं ॥ १७ ॥ सबेसिंपि वयाणं, जग्गाणं  
 अन्ति कोइ पमिआरो ॥ पक्कधरुस्सव कन्ना, न  
 होइ सीलं पुणो जग्गं ॥ १८ ॥ वेआलजूअरुक्कस  
 -केसरिचित्तयगइंदसप्पाणं ॥ लीलाइं दलइ दप्पं,  
 पालंतो निम्मलं सीलं ॥ १९ ॥ जे केइ कम्ममुक्का,  
 सिद्धा सिद्यंति सिज्जिहिंति तहा ॥ सबेसिं तेसिं  
 बलं, विसालसीलस्स माहप्पं ॥ २० ॥

॥ अथ श्री तपकुलकम् लिख्यते ॥

सो जयउ जुगाइजिणो, जस्संसे सोहए जमा-  
 मउमो ॥ तवजाणग्गिपल्लिविय-कम्मिधण धूम  
 पंत्तिव ॥ १ ॥ संवहरियतवेणं, काउसग्गंमि जो  
 ठिउं जयवं ॥ पूरियनिययपइन्नो, हरउ डुरिआइं  
 बाहुबली ॥ २ ॥ अथिरंपि थिरं वंकं-पि उजुअं

दुह्वहंपि तद् सुलहं ॥ दुस्सज्जंपि सुसद्यं, तवेण  
 संपज्जाए कज्जं ॥ ३ ॥ ठठं ठठेण तवं, कुणमाणो  
 पढम गणहरो जयवं ॥ अस्कीणमहाणसीउ, सिरि  
 गोअमसामिउ जयउ ॥ ४ ॥ ठज्जाइ सणंकुमारो,  
 तवबलखेलाइलज्जिसंपन्नो ॥ निठुअ खवल्लि अंगुलि,  
 सुवन्न कंति पयासंतो ॥ ५ ॥ गो बंज गप्प गप्पिणि,  
 बंजणि घायाइ गुरुअ पावाइ ॥ काऊणवि कणयं-  
 पिव, तवेण सुद्धो दढपहारी ॥ ६ ॥ पुव्वजवे तिव्व  
 तवो, तविउ जं नंदिसेण महारिसिणा ॥ वसुदेवो  
 तेण पिउ, जाउ खयरौ सहस्साणं ॥ ७ ॥ देवावि  
 किंकरत्तं, कुणंति कुलजाइविरहिआणंपि ॥ तव-  
 मंतपज्जावेणं, हरिकेसवल्लस्स वरिसिस्स ॥ ८ ॥  
 परुसयमेगपणेणं, एगेण घणेण घरुसहस्साइ ॥  
 जं किर कुणंति मुणिणो, तवकप्पतरुस्सत्तंक्खू  
 फलं ॥ ९ ॥ अनिआणस्स विहीए, तवस्स तविय-  
 स्स किं पसंसामो ॥ किज्जाइ जेण विणासो, निका-  
 इयाणंपि कम्माणं ॥ १० ॥ अइडुकरतवकारी,  
 जगगुरुणा कन्हपुठ्ठिण तया ॥ बाहरिउ स

महप्पा, समरिज्जाउ ढंढणकुमारो ॥ ११ ॥ पइ-  
 दिवसं सत्तजणे, वहिजणं गहियवोरजिणदिस्का  
 ॥ दुग्गाजिग्गहनिरउं, अज्जुणउं माळिउं सिद्धो  
 ॥ १२ ॥ नंदीसररुअगेसुवि, सुरगिरिसिहरेसु एग-  
 फालाए ॥ जंघाचारण मुष्णिणो, गहंति तवप्प-  
 चावेण ॥ १३ ॥ सेणियपुरउं जेसिं, पसंसिअं सामिणा  
 तवोरूवं ॥ ते धन्ना धन्नमुणि, दुन्नवि पंचुत्तरे पत्ता  
 ॥ १४ ॥ सुजिउणं तव सुंदरि, कुंमरीए अंबि-  
 लाणि अणवरयं ॥ सठ्ठिंवास सहस्सा, जण कस्स  
 न कंपए हिययं ॥ १५ ॥ जं विहिअमंबिलतवं,  
 बारस वरिसाइं सिवकुमारेण ॥ तं दत्तु जंबुरूवं,  
 विम्हइउं कोणिउं राया ॥ १६ ॥ जिणकप्पिय  
 परिहारिअ, पग्गिमा पग्गिवन्न लंदयाइणं ॥ सोऊण  
 तवसरूवं, को अन्नो वहउ तवगवं ॥ १७ ॥ मास-  
 ऊमासखवउं, बलज्जदो रूववंपि हु विरत्तो ॥ सो  
 जयउं रत्तवासी, पग्गिबोहिअसावयसहस्सो ॥ १८ ॥  
 थरहरिअ धरं ऊलहलिय-सायरं चलियसयल-  
 कुलसेलं ॥ जमकासि जयं विणहु, संघकए तं तवस्स

फलं ॥ १९ ॥ किं बहुणा जणिणं, जं कस्सवि  
कहवि कव्विसुहाइं ॥ दीसंति जवणमये, तह  
तवो कारणं चेव ॥ २० ॥

॥ अथ श्री चावकुलकम् लिख्यते ॥

कमठासुरेण रइयं—मि जीसणे पलयतुद्ध-  
जलबोले ॥ चावेण केवललब्धिं, विवाहिजं जयउ  
पासजिणो ॥ १ ॥ निचुन्नो तंबोलो, पासेण विणा  
न होइ जह रंगो ॥ तह दाणसीलतवजा—वणाउ,  
अहलाउ चावविणा ॥ २ ॥ मणि मंत उसहीणं,  
जंतयतंताण देवयाणंपि ॥ चावेण विणा सिद्धी,  
न हु कस्सइ दीसई लोए ॥ ३ ॥ सुहजावणा-  
वसेणं, पसन्नचंदो मुहुत्तमित्तेण ॥ खविऊण कम्म-  
गंछिं, संपत्तो केवलं नाणं ॥ ४ ॥ सुस्सूसंती पाए,  
गुरुणीणं गरहिऊण नियदोसे ॥ उप्पन्नदिवनाणा,  
मिगावई जयउ सुहजावा ॥ ५ ॥ जयवं इलाइपुत्तो,  
गुरुए वंसंमि जो समारूढो ॥ दवूण मुणिवरिंदे,  
सुहजावा केवली जाउ ॥ ६ ॥ कविलोअबंनण

मुणी, असोगवणिआइमद्यारंमि ॥ लाहालोह-  
 त्तिपयं, जायंतो जायजाइसरो ॥ ७ ॥ खवगनिम-  
 तणपुवं, वासियजत्तेण सुळ्ळावेण ॥ जुंजंतो वर-  
 नाणं, संपत्तो कूरगळ्ळु ॥ ८ ॥ पुव्वजवसूरिविरईय-  
 -नाणासायण पज्जाव दुम्मेहो ॥ नियनामं जायंतो,  
 मासतुसो केवलीजाउ ॥ ९ ॥ हत्थिंमि समारूढा,  
 रिद्धिं दतूण उसज्जसामिस्स ॥ तस्सकण सुहजाणेणं,  
 मरुदेवी सामिणी सिद्धा ॥ १० ॥ पणिजागर-  
 माणीए, जंघाबलखीणमन्निआपुत्तं ॥ संपत्त  
 केवलाए, नमो नमो पुप्फचूलाए ॥ ११ ॥ पनरसय  
 तावसाणं, गोअमनामेण दिन्न दिस्काणं ॥ उप्पन्न  
 केवलाणं, सुहजावाणं नमो ताणं ॥ १२ ॥ जीव-  
 स्स सरीराउ, जेअं नाउं समाहिपत्ताणं ॥ उप्पा-  
 णियनाणाणं, खंदगसीसाण तेसि नमो ॥ १३ ॥  
 सिरि वळ्ळमाणपाए, पूअब्धी सिंदुवारकुसुमेहिं ॥  
 ज्जावेणं सुरलोए, दुग्गइनारी सुहं पत्ता ॥ १४ ॥  
 ज्जावेण जुवणनाहं, वंदेउ दुदरोवि संचलिउ ॥  
 मरिऊण अंतराळे, नियनामंको सुरो जाउ ॥ १५ ॥

विरयाविरयसहोअर, उदगस्स जरेण जरिअसरि-  
 आए ॥ जणिआइ साविआए, दिन्नो मग्गुत्ति  
 जाववसा ॥ १६ ॥ सिरिचंरुद्धगुरुणा, तामिज्जंतोवि  
 दंरुघाएहिं ॥ तक्कालं तस्सीसो, सुहलेसो केवली  
 जाउं ॥ १७ ॥ जंनहुजणिउं बंझो, जीवस्स वहेवि  
 समिइगुत्ताणं ॥ जावो तन्नपमाणं, न पमाणं काय-  
 वावारो ॥ १८ ॥ जाव च्चिअ परमहो, जावो धम्म-  
 स्स साहउं जणिउं ॥ सम्मत्तस्सवि बीअं, जाव  
 च्चिअ बिंति जगगुरुणो ॥ १९ ॥ किं बहुणा जणि-  
 एणं, तत्तं निसुणेह जो महा सत्ता ॥ मुक्कसुह-  
 बीयभूउं, जीवाण सुहावहो जावो ॥ २० ॥ इयदाण  
 सील तव जा-वणाउजो कुणइ सत्ति जत्ति परो ॥  
 देविंदविंदमहिअं, अइरा सो लहइ सिद्धिसुहं २१

॥ अथ मिथ्यात्वकुलकं लिख्यते ॥

लोइअ लोउत्तरियं, देवगयं गुरुगयं च  
 उजयंपि ॥ पत्तेयं नायवं, ज्ञाह कमं सुत्तउ एवं  
 ॥ १ ॥ हरिहर बंजार्इणं, गमणं जुवणेषु पूअ

नमणाई ॥ वज्रिज्जे समदिठी, तडुत्तमेश्रंपि निठ-  
 यउं ॥ १ ॥ मंगल नाम गहणं, विणाय गाईण  
 कज्ज पारंजे ॥ ससि रोहिणी गेआई, विणायग  
 ववणं च विवाहे ॥ ३ ॥ ठठी पुअण माउणठ-  
 विणं, बीयाइं चंद दसियं च ॥ दुग्गाईणो वाईया,  
 तोतलया गहाय महिमं च ॥ ४ ॥ चित्तठमि मा-  
 हनवमी, रविरहनिरकमण सुरगहणाई ॥ होलीय  
 पयाहिणं, पिंरु पारुण थावरे पूआ ॥ ५ ॥ इवू  
 ठमि संकंति, पूजा रेवंत पंथ देवाण ॥ सिवरत्ति  
 वठ बारसी, खित्ते सीआइ अच्चणयं ॥ ६ ॥ देवय  
 सत्तमि नागण. पंचमी मलगाइ माऊण ॥ रवि  
 ससिवारेसु तवो, कुदिठि गुत्ताइं सुरपूआ ॥ ७ ॥  
 नवरत्ताइंसुतत् पूअ माई, बुहाअठमिग्गि होमं  
 च ॥ सुन्निणिरूपिणिरंगिणि, पूंआधय कंबलो  
 माहे ॥ ८ ॥ कज्जल तईआ तिल, दऊदाणं मय  
 जलंजली दाणं ॥ सावण चंदण ठठिं, गो पूठा-  
 इसु करस्सहेउ ॥ ९ ॥ अकठठी गौरी जत्त च,  
 सवति पियर पन्निमाउं ॥ उत्तरयण भूआण, मद्धग

गोमय तइया ॥ १० ॥ देवस्स सुअण उठावणं,  
 आमलीकण पंरुवाणं च ॥ इक्कारसी तवाई, पर-  
 तिठ गमण खण करणं ॥ ११ ॥ सद्ध मासिअ  
 ठम्मासियाई, पवदाण कन्नहलति ॥ हउ जल  
 घरुदाणा, लोहणयदाणं विय मिठ्ठादिठीणं ॥ १२ ॥  
 कौमारि आइ जत्तं, धम्मठं ववरीउ चित्तंमि ॥  
 असंजयणो आणा, अखयतईआ अकत्तणायं  
 ॥ १३ ॥ संरुविवाहो जिठिणि, अमावासाए वि-  
 सेसउ ॥ भूजं कुवाइ खणण, गोअरस हिंरुण  
 पियर हंताई ॥ १४ ॥ वायसबिम्बाल माइपिंको,  
 तरूरोवण पवित्तपउ ॥ तालायर कहसवणं, गोध-  
 णमह इंदजालं च ॥ १५ ॥ धम्मग्गिदय नट पि-  
 ष्ठण च, पायकजुज्झ दरसणयं ॥ एवं लोअगूरू-  
 णवि, नमणंदिअ तावसाईणं ॥ १६ ॥ मूले सोसा  
 जाए, बालेजवणंमि बंजगोहवणं ॥ तक्कह सवणं  
 दाणं, गिहिगमणे ज्ञोयणोइय ॥ १७ ॥ एवं लोईय  
 गिठं, देवगयं गुरूगयंतु परिहरियं ॥ लोउत्तरे  
 विवज्जाइ, परतिठं संगहियबिंबे ॥ १८ ॥ जठ जि-

णमंदिरंमिवि, निप्पवेसो अबलसमणाणं ॥ वासो-  
 अनंदि बलिदाण, नाहणनट्ट पयदाय ॥ १९ ॥  
 तंबोलाई आसायणाउ, जलकेलि देवयंदोलं ॥  
 लोश्य देवगिहेसुव, वट्ठं असमंजसं एवं ॥ २० ॥  
 तस्सवि सम्मदिठी, न सायरं सम्मरक्खण पराणं ॥  
 उस्सुत्त वज्झग्गाणं, कप्पइं सवसाणनोगमणं ॥ २१ ॥  
 जो लोगोत्तम लिंगा, लिंगिअ देहावि पुप्फ तं-  
 बोलं ॥ आहाकम्मं सव्वं, जलं फलं चेव सच्चितं  
 ॥ २२ ॥ जुंजंति ढो पसंगं, ववहारं गंथसंगहं  
 भूसं ॥ एवागित्तज गमणं, सव्वंद चेठिय वयण  
 ॥ २३ ॥ चेश्यं मढाइ वासं, वसहीसु वि निच्चमेव  
 संठाणं ॥ गेयं नेअं चरणाणं, अच्चावण मवि क-  
 णयकुसुमेहिं ॥ २४ ॥ तिविहंतिविहेणमिहत्तं, जे-  
 हिंति वजियं डुरं ॥ निहयउ ते सद्धा, अन्नेउण  
 नामउचेव ॥ २५ ॥ जिणवय मयाणु सारं, एयं  
 पावंति जेउ संमत्तं ॥ ते सिध्दं निविध्दं, पावंति  
 धुवं सिवं सुहयं ॥ २६ ॥

---

॥ अथ आत्मकुलकं लिख्यते ॥

धम्म प्पह रमजि ज्ञो, पणामितु जिणे म-  
हिंद नमणिज्जो ॥ अप्पा वबोह कुलयं, वुठं जव-  
दुक्क कय पलयं ॥ १ ॥ अत्ता वगमो तज्जाई, स-  
यमेव गुणेहिं किं बहु जणसि ॥ सूर दउ लखि-  
ज्जाई, पहाइनउ सवह निवहेण ॥ २ ॥ दम सम  
सत्तम मित्ति, संवेण विवेय तिव्वनिवेया ॥ एए  
पगूढ अप्पा, वबोह बीयस्स अंकुरा ॥ ३ ॥ जो  
जाणइ अप्पाणं, अप्पाणं सो सुहाणं नहु कामी  
॥ पत्तंमि कप्परूस्के, रूस्के किं पण्णया असणे  
॥ ४ ॥ निअविन्नाणे निरया, निरयाइ दुहं लहंति  
न कयावि जोहोइ मग्ग लग्गो, कह सो निवहेइ  
कूवंमि ॥ ५ ॥ तेसि दुरेसिद्धी, रिद्धी रणरणय  
कारणं तेसिं ॥ तेसि मपुन्ना आसा, जेसिं अप्पा  
न विन्नाउ ॥ ६ ॥ ता दुत्तारो जवजलहो, ता  
दुज्जेठ महालउ मोहो ॥ ता अइ विसमो लोहो,  
जाजाउ नो निउबोहो ॥ ७ ॥ जेण सुरअसुर नाहा,  
हाहा अणाहुव बाहिआसोवि ॥ अऊप्पजाणं ज-

लणो, इष पयंगुत्तणं कामो ॥ ७ ॥ जं बद्धंपिन-  
 चिठई, वारिज्जांतं विसट्टइ असेसा ॥ जाण बलेणं  
 तंपिहु, सयमेव विलिज्जाइ चित्तं ॥ ८ ॥ बाहि  
 रंतरंग ज्ञेया, विविहवाही नदिति तस्सट्टुहं ॥  
 गुरुवयणाउजेणं, सुहजाण रसायणं पत्तं ॥ १० ॥  
 जिअमप्प चित्तणपरं, न कोई पीमेई अहवा पी-  
 मेई ॥ ता तस्स नब्बि डुक्कं, रिण मुक्कं मन्नमा-  
 णस्स ॥ ११ ॥ डुक्काणखाणीखलु रागदोसो, तेउं-  
 तिचित्तंमि चलाचलंमि ॥ अप्रप्पजोगेण चएइ  
 चित्तं, चलेत्तमालाणिअ कुंजरुवं ॥ १२ ॥ एसो-  
 मित्तममित्तं, एसो सग्गो तहेव नरउंअ ॥ एसो  
 राया रंको, अप्पातुठो अतुठो वा ॥ १३ ॥ लद्धा-  
 सुरनर रिद्धी, विसया वि सयानिसेविआ एण ॥  
 पुण संतोसेणविणा, किं कल्लवि निवुइ जाया ॥ १४ ॥  
 जीवसयंचिअ निम्मिय, तणु धणु रमणी कुटंब  
 नेहेणं ॥ मेहेणवि दिणनाहो, ठाइज्जासिं तेअवं-  
 तोवि ॥ १५ ॥ जं बाहिवाल वेसानराण, तुहवे-  
 रीआण साहीणं ॥ देहेतल्ल ममत्तं, जिअकुणमा-

णोवि किं लहसि ॥ १६ ॥ वरजत्त पाणन्हाणाय,  
 सिंगार विलेवणेहिं पुठोवि ॥ निअ पहुणो विह-  
 रंतो, सुणहेणवि न सरिसोदेहो ॥ १७ ॥ कठाइ  
 करुअ बहुआ, जं धण मावज्जिअं तएजीव ॥  
 कठं तुज्जा दाउं, तं अंतं गहिअमन्नेहिं ॥ १८ ॥  
 जहजह अन्नाण वसा, धणधन्न परिग्गहं बहुं  
 कुणसि ॥ तहतह लहु निमज्जसि, जवेजवे जा-  
 रिअ तरिवं ॥ १९ ॥ जा सुविणे विहु दिठी,  
 हरेइ देहिण दिह सबस्सं ॥ सानारी मारी इव,  
 चयसु तुह दुबलत्तेणं ॥ २० ॥ अहिलससि चि-  
 त्तशुद्धि, रज्जसि महिलासु अहह मुढत्तं ॥ नीली-  
 मिलीए वणंमि, धवलिमा किं चिरंठाई ॥ २१ ॥  
 मोहेण जव दुरिण, बंधि खित्तोसि नैह निगमेहिं ॥  
 बंधव मिसेण मुक्का, पहरीआ तेसु कोराउ ॥ २२ ॥  
 धम्मो जणउ करुणा, माया जायाविवग नामेण ॥  
 खंति पिआ सुपुन्ना, गुणो कुटंबइमकुणसु ॥ २३ ॥  
 अइ पालियाइं पगइ, जं जामीउसि बंधेउ ॥  
 संतेवि पुरिसकारे, न लज्जसे जीव तेणंपी ॥ २४ ॥

सयमेव कुणसि कम्मं, तेण्य वाहिज्जसितुमंचेव ॥  
 रे जीव अण्ण वेरिआ अन्नस्सय देसि किं दोसं  
 ॥ २५ ॥ तं कुणसि तं च जंपसि, तं चिंतसि जेण  
 वसणोहे ॥ एय स गिहरहस्सं, नसक्किमो कहिउ  
 मन्नस्स ॥ २६ ॥ पंचिंदिअ परा चोरा, मण जुव-  
 रन्नो मिलित्तु पावस्स ॥ निअनिअअन्न निरत्ता,  
 मुलठिअं तुज्ज बुपंति ॥ २७ ॥ हणिउ विवेकग  
 मंती, जिन्नं चउरंग धम्म चक्कंपि ॥ मुठं नाणाइ  
 धणं, तुमंपि बूढो कुगइकूवे ॥ २८ ॥ इतिअ  
 कालं हुंतो, पमाइ निदाइ गली चे अन्नो ॥ जइ  
 जग्गिउंसि संपइ, गुरूवयणा ता नवेएसि ॥ २९ ॥  
 लोग पमाणोसि तुमं, नाणमउणंत विरिउंसितुमं ॥  
 निय रज्जठिअं चिंतसु, धम्मज्जाणा सणासीणे  
 ॥ ३० ॥ कोवमणो जुवराया, कोवा रायाइ रजा-  
 पऊंसो ॥ जइ जग्गिउंसि संपइ, परमेसर पइस  
 चे अन्ने ॥ ३१ ॥ नाणमउं वि जमोविव, पुज्जव  
 चोरुवज्जजाउसि ॥ जवडुग्गामे किं तन्न, वससि  
 साहिण सिवनयरे ॥ ३२ ॥ जन्न कसाय चोरा,

महवाया सावया सया घोरा ॥ रोगा दुठ जुअंग्गा,  
 आसा सरीआ घण तरंगा ॥ ३३ ॥ चिंता रुवी  
 स कठा, बहुलतमा सुंदरो दरीदिठा ॥ खाणो  
 गइअ नेआ, सिहराई अठ मय जेआ ॥ ३४ ॥  
 रयणिअरोमिष्ठत्तं, मण दुक्कमुत्त सिद्धाजु ममत्तं ॥  
 तंजिदसु जवसेलं, जाणासणिणा जिअ सहेलं  
 ॥ ३५ ॥ जठ ठि आय नाणं, नाणंपि वियाणं  
 सिद्ध सुहयं तं ॥ सेसं बहुंपी अहियं, जाणसु  
 आजिविआ मित्तं ॥ ३६ ॥ सुबहुं अहिअं जह  
 जह, तहतह गवेण पूरिअं चित्तं ॥ हिअ अप्प  
 बोह रहीअस्स, उसहाउ उठ्ठिउ वाहो ॥ ३७ ॥  
 अप्पाण म बोहंता, परं विबोहंती केई तेवि जमा  
 जण परियणंमि बूहिण, सत्तु गारे किं कज्जां ॥ ३८ ॥  
 बोहंति परं कीवा, मुणंति कालं खरा पढति सुअं  
 ॥ ठाण मुअंति सयावि हु, विणा य बोहं पुणन  
 सिद्धि ॥ ३९ ॥ अवरो न नंदिअवा, पसंसि  
 अबो कयावि नहु अप्पा ॥ समजावो कायवो,  
 बोहस्स रहस्स मिणमेव ॥ ४० ॥ पर सखित्तं

नजसु, रंजसु अप्पाण मप्पणा चेव ॥ वज्जसु  
 विकहाए, जइ इहसिअप्प विन्नाणं ॥४१॥ तं नणसु  
 गणसु वायसु, जायसु उवइसिसु आयरसु ॥ जिअ  
 खणमित्तं पि विअखण, आयारामे रमसि जेणं  
 ॥ ४२ ॥ इअजाणिहुण तत्तं, गुरू वईठं परं कुण  
 पयत्तं ॥ लहिऊण केवल सिरिं, जेणं जयसेहरो  
 होसि ॥ ४३ ॥

॥ अथ श्री समवसरणप्रकरण लिख्यते ॥

थुणिमो केवलि वड्डं, वरविज्जाणंद धम्म-  
 कितिड्डं ॥ देविंद नय पयड्डं, तिड्डयरं समवसरणड्डं  
 ॥ १ ॥ पयमिअ समठ जावो, केवलि जावो जिणा-  
 णजड्डजवे ॥ सोहंति सब्बउ तहिं, महि मा जोयण  
 मनिल कुमारा ॥ २ ॥ वरसंति मेह कुमरा, सुरहि  
 जलं रिउ सुरा कुसुमपसरं ॥ विरयंति वणामणि  
 कणग, रयण चित्तं महीअलं तौ ॥ ३ ॥ अज्जितर  
 मऊवहिं, तिवप्पमणिरयणकणयकवीसीसा ॥  
 रयण ज्जुण रूपमया, वेमाणिअ जोइ नवण कया

॥ ४ ॥ वहंमि दुँत्तोस गुल, तातिस धणुपिहुल  
 पणसय धणुच्च ॥ ४ धणु सय इगकोसं, तराय  
 रयणमय चउदारा ॥ ५ ॥ चउरंसे इग धणुसय,  
 पिहु वप्पा सह कोसं अंतरिआ ॥ पढम बिआ-  
 बिआबिअतइआ, कोसंतर पुवमिवसेसं ॥ ६ ॥  
 सोवाण सहसदसकर, पिहु च गंतुं जुवो पढम  
 वप्पो ॥ तो पन्ना धणु पयरो, तउअ सोवाण पण  
 सहसा ॥ ७ ॥ तो बिअ वप्पो पनधणु, पयर सोवाण  
 सहस पणतत्तो ॥ तईउ वप्पो ठसय, धणु इग-  
 कोसेहिं तोपीढं ॥ ८ ॥ चउदार ति सोवाणं,  
 मजेमणिपीठयं जिणतणुच्चं ॥ दो घणुसय पिहु  
 दीहं, सह दु कोसेहिं धरणीयला ॥ ९ ॥ जिण-  
 तणुबारगुणुच्चो, समहिअजोअण पिहुअसोगतरू  
 ॥ तयहोइ देव ठंदो, चउ सीहासण सपयपीढा  
 ॥ १० ॥ तडुवरिचऊत्ततया, पमिरूव तिगं तह-  
 अअठ चमरधरा ॥ पुरउं कणय कुसेसय ठिअ,  
 फालिह धम्म चक्र चहु ॥ ११ ॥ ऊयत्त मयर-  
 मंगल, पंचाली दाम वेइ वर कलसे ॥ पइदारं

मणि तोरण, तिय धुवघनी कुणंति वणा ॥११॥  
 जोयण सहस्स दंरु, चउऊया धम्म माण गय  
 सींहा ॥ कुकुजाइ जुआसवं, माणमिणं निय निय  
 करेण ॥१३॥ पविसिअ पुवाइ पहु, पयाहिणं पुवआ-  
 सणनिविठो ॥ पयपीढ ठविअ पाउं, पणमिअतिहं  
 कहइ धम्मं ॥ १४ ॥ मुणि वेमाणिणि समणि,  
 सजवणजोइ पणदेविदेवतियं ॥ कप्प सुर नर ण्ठि  
 तिअं, ठंतिगो इ विदिसासु ॥ १५ ॥ चउ देवि  
 समणिउठठिआ, निविठा नरिणिसुर समणा ॥  
 इअ पण सगपरिस सुणंति, देसणं पणम  
 वप्पंतो ॥ १६ ॥ इअ आवस्सय वीति बुत्तं,  
 चुन्निय पुणमुणि निविठा ॥ वेमाणिय समणी  
 दो, उट्ठ सेसा ठिआउ नव ॥ १७ ॥ बीअंतो  
 तिरि ईसाणि, देवहंदोअ जाण तइयंतो ॥  
 तह चउरंसे डुडु वावि, कोणउ वदि इक्किआ  
 ॥ १८ ॥ पीअ सिअ रत्त सामा, सुरवण जोइ ज-  
 वणारयणवप्पे ॥ घणु दंरु पास गय हठा, सोम  
 जमवरुण धणजस्का ॥ १९ ॥ जय विजया जिअ

अपराजिअत्ति, सिय अरूणपीयनी लात्ता ॥ बीए  
 देवीज्जुअला, अन्नयं कुस पास मगरकरा ॥ २० ॥  
 तइअ बहि सुरा तुंबरू, खट्ठंगिकपालि जरु भउ-  
 रुधारी ॥ पुवाइ दारपाला, तुंबरू देवोअ पन्नि-  
 हारो ॥ २१ ॥ सामन्न समोसरणे, एस विही एइ  
 जइ महद्धि सुरो ॥ सब मिणं एंगोवि हु, सकु-  
 णइ जयणेय रसुरेसु ॥ २२ ॥ पुव मजायंजठउ,  
 जठेइ सुरो महद्धि मघवाई ॥ तठउ सरणं नियमा,  
 सययं पुण पानि हेराइं ॥ २३ ॥ दुब्बिअ समठ  
 अब्बिअ, जण पब्बिअ अठ सुसरुठो ॥ इठं शुउं  
 अहुजणं, तीठयरो कुणउ सुपयठं ॥ २४ ॥

॥ श्री ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ॥

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुं चाषि-  
 तम् ॥ ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, ज्ञव्यानां सुखहेतवे  
 ॥ १ ॥ जन्मलग्ने च राशौ च, यदा पीरन्ति खेचराः  
 ॥ तदा संपूजयेद्ग्रीमान्, खेचरैः सहितान्जिनान्  
 ॥ २ ॥ पुष्पैर्गन्धैर्द्व्युपदीपैः, फलनैवेद्यसंयुतैः ॥ वर्ण-

सहस्रदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ ३ ॥ पद्म-  
 प्रज्ञस्य मार्तण्ड, श्रन्दश्चन्द्रप्रज्ञस्य च ॥ वासुपूज्यो  
 जूसुतश्च, बुधोऽप्यष्टजिनेश्वराः ॥४॥ विमलानन्त-  
 धर्माऽराः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा ॥ वर्द्धमानो  
 जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुधो न्यसेत् ॥५॥ रुषज्ञाजित  
 सुपार्श्वा, श्राजिनन्दनशीतलौ ॥ सुमतिः संज्ञव-  
 स्वामी, श्रेयांसश्च बृहस्पतिः ॥६॥ सुविधेः कथितः  
 शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः ॥ नेमिनाथस्य राहुः  
 स्यात्, केतुः श्री मल्लीपार्श्वयोः ॥७॥ जिनानामग्रतः  
 कृत्वा, ग्रहाणां शान्ति हेतवे ॥ नमस्कारशतं ज्ञक्या,  
 जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥८॥ ज्ञद्रबाहुस्वाचैवं, पञ्चमश्रुत  
 केवली ॥ विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिविधि-  
 शुद्धम् ॥ ए ॥

ॐ हौं श्रीं ग्रहाश्चन्द्र सूर्याङ्गारक बुध  
 बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतुसहिताः खेटा  
 जिनपतिपुरतो वस्तिष्ठन्तु, मम धन धान्य जय-  
 विजयसुखसौभाग्यधृतिकीर्तिकान्तिशांति तुष्टि  
 पुष्टि बुद्धि लक्ष्मी धर्मार्थ कामदाः स्युः स्वाहा ॥

જૈન ધર્મના દરેક જાતના  
પુસ્તકો  
મલ્લવાનું મથક

મહેતા  
નાગરદાસ પ્રાગજીભાઈ  
ઠે, દેશીવાડાની પોલ  
અમદાવાદ.

સંઘવી  
મુલજીભાઈ જ્ઞાવેરચંદ  
જૈન બુકસેલર  
પાલીતાણા.

